R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर (आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

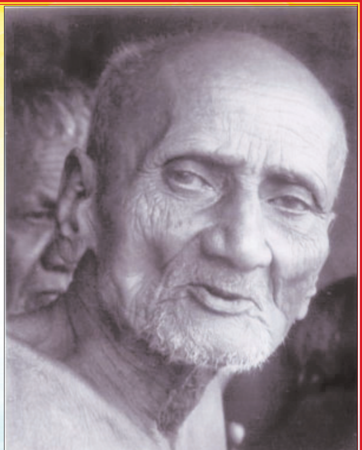
बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

ब्राह्मण एवं जैन परिवार करा रहा जैन आचार्य का चातुर्मास पृष्ठ 05 पर...

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 37 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 14 जुलाई 2025, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

टोंक में हुई आचार्यश्री वर्धमान सागरजी के चातुर्मास की मंगल कलश स्थापना

राजेश पंचोलिया

टोंक, 8 जुलाई। 20वीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की अक्षुण्ण परंपरा के पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में ध्वजारोहण पुण्यार्जक परिवार श्रेष्ठी श्रीमान टीकमचंद जी, श्याम लाल जी, धर्मचंद जी, भागचंद जी, उत्तमचंद जी फूलेता वाले परिवार के द्वारा संपन्न हुआ।

आचार्य श्री ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि समाज में सुख, शांति धर्म में वृद्धि के लिए ध्वजारोहण किया जाता है, भावना भव जन्म मरण के आवागमन को नष्ट करती है। सरल, सहज और उदार भावना के साथ किया गया धार्मिक कार्य सफल होता है। धर्म और अर्थ के प्रति उदारता अच्छी है, धर्म की उदारता से अर्थ का उपार्जन होता है। धर्म धारण करने से प्रतिकूलता अनुकूलता में बदल जाती है, क्योंकि धार्मिक कार्य से पुण्य का अर्जन होता है। और प्रतिकूलता पाप कर्मों के कारण होती है, आगम जिनवाणी में इसका उपाय बताया है कि धर्म धारण करने से प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदला जाता है। चातुर्मास में अनेक पर्व आते हैं गुरु पूर्णिमा, वीर शासन जयंती, दशलक्षण पर्व आत्मा की विशुद्धता के लिए होते हैं, गुरु पूर्णिमा के पूर्व आचार्य श्री ने दीक्षा गुरु आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज को स्मरण कर उनके गुणानुवाद किया।

जिनालय में दर्शन अभिषेक पूजन से जीवन का निर्माण होता है, यह मंगल देशना पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने 57 वें वर्षायोग स्थापना के पूर्व आयोजित ध्वजारोहण के पश्चात धर्म सभा में प्रकट की। गुरुभक्त राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री के प्रवचन के पूर्व मुनि श्री हितेंद्र सागर जी ने वर्षायोग में श्रावकों को साधुओं की धार्मिक क्रियाओं की अनुकूलता के लिए कार्य करना चाहिए। समय का उपयोग कर वर्षायोग में साधुओं द्वारा धर्म की वर्षा की जाती है, इससे जीवन में बदलाव लाने का प्रयास करना चाहिए।

चातुर्मास समिति मीडिया प्रभारी रमेश काला, प्रवक्ता पवन कंटान एवं विकास जागीरदार अनुसार धर्म उपदेश के पूर्व आदिनाथ भगवान एवं आचार्य शांति सागर जी सहित सभी आचार्यों के चित्रों के सम्मुख दीप प्रज्वलन स्व. बाबूलाल जी सेठिया परिवार नैनवां द्वारा किया गया। इसके पश्चात पूर्वाचार्यों को अर्घ्य समर्पण किया गया एवं आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन एवं पूजन किया गया। इसके पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ कलश स्थापना के साथ हुआ, प्रथम कलश वात्सल्य वारिधि वर्धमान सागर कलश का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमान पारस चंद, सुरेन्द्र कुमार, नरेंद्र कुमार, अंशुल कुमार, आरव, अंश, आशी, रीति छामुनिया परिवार को मिला। द्वितीय कलश आचार्य शांतिसागर कलश का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमान प्रहलाद चंद, विमल चंद, कमल कुमार, चेतन कुमार, अंकित कुमार अंश आंडरा परिवार को मिला। तृतीय मंगल कलश का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमान मदन लाल, मिट्ठू लाल, महावीर प्रसाद, ज्ञानचंद, सन्मति कुमार जी दाखिया परिवार को प्राप्त हुआ। चतुर्थ कलश आचार्य शिव सागर कलश का सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमती राधा देवी, सौरभ कुमार, जंबू कुमार, टोनी कुमार आंडरा परिवार को मिला। पंचम कलश आचार्य धर्मसागर जी कलश का सौभाग्य श्रेष्ठी श्री मोहन लाल, पदम चंद, ज्ञानचंद, मनोज कुमार, कमल कुमार छामुनिया परिवार को मिला। षष्ठम कलश आचार्य अजीत सागर कलश का सौभाग्य महावीर प्रसाद, धर्मेंद्र कुमार, जितेंद्र कुमार, अविकांश कुमार पासरोटियां परिवार को मिला।

शेष पृष्ठ 11 पर...

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
7 खुबसूरत देशो की सैर
10 Sep, 23 Sep, 25 Oct, 14 Nov
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

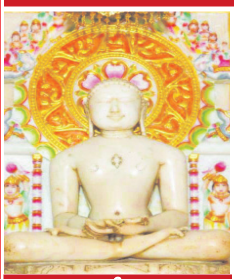

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा
शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।
हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री)
9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष)
095880-20330

JK MASALE SINCE 1957
Buy online on jkcart.com
— Breakfast Matlab —
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

परिणामों की विशुद्धि से ही मोक्ष मार्ग प्रशस्त होगा

- आचार्य अतिवीर मुनिराज

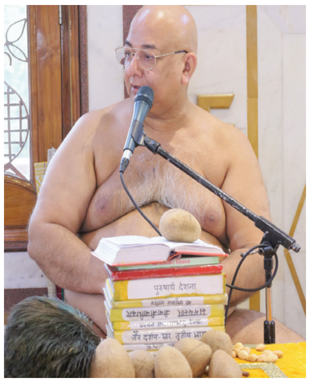

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज (छाणी) परम्परा के प्रमुख संत परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज के पावन सान्निध्य में रोहिणी-पीतमपुरा क्षेत्र में व्यापक धर्म-प्रभावना सानंद संपन्न हो रही है। रोहिणी सेक्टर-8, शालीमार बाग, प्रशांत विहार, बुध विहार, रोहिणी सेक्टर-24 में भक्तों को लाभान्वित करते हुए श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर, रोहिणी सेक्टर-11 पधारने पर पूज्य आचार्य श्री का समस्त समाज द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री का यहां से मंगल विहार कर राजस्थली अपार्टमेंट, अशोक विहार फेज-1 व शालीमार बाग होते हुए दिनांक 13 जुलाई 2025 को मजलिस पार्क आदर्श नगर में मंगल चातुर्मास 2025 हेतु विशाल शोभायात्रा के साथ भव्य प्रवेश के समाचार हैं। 40 वर्षों के इतिहास में पहली बार आदर्श नगर में दिगम्बर संत का चातुर्मास हो रहा है। दिगम्बर व श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा संयुक्त रूप से आगामी 20 जुलाई 2025 को रजवाड़ा पैलेस (जी. टी. करनाल रोड़) में आचार्य श्री के 20वें मंगल चातुर्मास हेतु भव्य कलश स्थापना समारोह का ऐतिहासिक आयोजन किया जा रहा है।

- समीर जैन

गुरु पूर्णिमा पर जैन साधु को आहारदान उत्कृष्ट कार्य

-आचार्यश्री निर्भय सागरजी

ललितपुर। आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज ने जैन दर्शन में गुरुपूर्णिमा की महिमा बताई और कहा कि गुरु के माध्यम से ही धर्म का बोध होता है। गुरु अपने आप में पूर्ण माँ है। यह स्वयं पूर्णिमा शब्द कहता है। सच्चा गुरु वही है जो शिष्य को अनर्थ से बचाए और परमार्थ में लगाए। असंयम से संयम में, भोग से योग में, राग से वैराग्य में, आधुनिकता में ले जाए। गुरु को ब्रह्म इसलिए कहते हैं क्योंकि गुरु ही शिष्य के जीवन का अच्छा सृजन करते हैं। गुरु ही शिष्य के पापों और दुखों का संहार करते हैं। गुरुपूर्णिमा पर आहारदान श्रावक के लिए श्रेष्ठ दान बताते हुए आचार्य श्री ने कहा कि इस दिन जो गुरु को आहारदान देता है उसको असीम पुण्य का संचय होता है और पाप धुलते हैं। प्रातःकाल गुरुपूर्णिमा पर पार्श्वनाथ जैन अटा मंदिर में आचार्य श्री की अष्ट मंगल द्रव्यों से पूजन हुई और पाद प्रक्षालन किया गया। इसके उपरान्त आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज ससंघ की आहारचर्या हुई जिसमें आचार्य श्री को आहारदान का पुण्यार्जन अनिल कुमार अक्षय अलया परिवार को मिला जहां सैकड़ों की संख्या में श्रावकों ने आहार दान कर पुण्य अर्जन किया।

आचार्य श्री के दर्शनार्थ भारी संख्या में अनेक भक्तगण श्रावक ललितपुर पहुंचे जहां उन्होंने आशीर्वाद ग्रहण किया। गौरतलब रहे ललितपुर नगर में आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज का जैन अटा मंदिर में चातुर्मास शुरू हो गया है। आचार्यश्री संघ में मुनि शिवदत्त सागर महाराज, मुनि सुदत्त सागर महाराज, मुनि भूदत्त सागर महाराज, मुनि पदमदत्त सागर महाराज, मुनि वृषमदत्त सागर महाराज, क्षुल्लक चन्ददत्त सागर महाराज एवं श्रीदत्तसागर महाराज विराजमान हैं जिनके माध्यम से अपूर्व धर्म प्रभावना हो रही है।

- अक्षय अलया

भरोसा करना है तो गुरु और प्रभु पर कीजिए.. वरना लोगों पर करके तो जीने की उम्मीद ही कम हो जाती है

अन्तर्मना आचार्यश्री प्रसन्न सागर जी

गुरु एक उपस्थिति है, सान्निध्य है, सामीप्य है, अवसर है। वह किसको कब उपलब्ध हो जाए कुछ कह नहीं सकते। लेकिन आज के वातावरण में हम सब मौल, माहौल और बाजार से प्रभावित लोग हैं। हर चीज वारंटी और गारंटी से खरीदते हैं। गुरु भी ऐसे ही बनाते हैं। सोमवार को गुरु बनाया, मंगलवार को खोट निकाली, बुधवार को छोड़ दिया और गुरुवार को फिर नये गुरु की तलाश शुरु हो जाती है। जिन्दगी भर यही चलता रहता है और गुरु नहीं मिल पाते...हमारे अपने ही कारण। जीवन में गुरु का उतना ही महत्व है जितना शरीर में स्वांस का, घर-परिवार, रिश्तों में विश्वास का।

एक संत बीमारियों से जूझ रहे थे, कहीं भी वो औषधि नहीं मिल रही थी जिससे गुरु ठीक हो जाए। संत किसी गाँव से गुजर रहे थे, शिष्यों ने गाँव वालों से पूछा यह जड़ी बूटी कहां मिलेगी...? गाँव वालों ने कहा - अरे जड़ी बूटी तो हमारे गाँव के कुएं में लगी है। शिष्य, गुरु और गाँव वाले कुए के पास गये। गाँव वालों ने कहा - वो देखो जो कुएं के अन्दर किनारे पर लगी है, ये वही औषधि है। शिष्य ने आव देखा न ताव कुएं में कूद गया। शिष्य जब औषधि लेकर कुएं से बाहर आया, गुरु ने पूछा - तुमको मौत का भय नहीं लगा..? शिष्य ने बहुत गहरी बात कही - गुरुदेव जिसकी डोर गुरु के हाथ में हो फिर उसे मौत का क्या डर। बात गहरी और समझने जैसी है। गुरु हमारे बुझे हुये दीप को जलाने की प्रेरणा देते हैं, गुरु अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का संकेत देते हैं, गुरु पाप के तिमिर को हटाकर, पुण्य के प्रकाश में जाने की दिशा बोध देते हैं। गुरु समझा सकते हैं, बता सकते हैं, मार्ग दिखा सकते हैं लेकिन समझना, जानना और चलना तो स्वयं को पड़ेगा। हम समझते हैं कि गुरू हमारे साथ चलेंगे, सब काम निपटा देंगे, बेटा-बेटी की शादी भी करवा देंगे, व्यापार भी सेट करा देंगे और अपने भक्त से लोन भी दिला देंगे। तो ऐसा भी नहीं है बाबू! सच तो यह है कि - हम गुरु पर आश्रित हो जाते हैं। उनके भरोसे जीना शुरु कर देते हैं। गुरू पर आश्रित नहीं बल्कि गुरू से संचालित होना चाहिए। हम भूल जाते हैं तो गुरू हमें याद दिलाते हैं - तुम बीज हो - वृक्ष बन सकते हो। बूंद हो - सागर बन सकते हो, श्रेष्ठ हो - सर्वश्रेष्ठ बन सकते हो। अपनी हर भूल को, गलती को, पाप और अपराध के बोध के लिए गुरु से जुड़े रहिये। भटकना, भूल करना, गलती, पाप और अपराध करना हमारा स्वभाव है। सही मार्ग पर लाना, सही मार्ग पर दर्शन देना, अपराध बोध कराना गुरु का फर्ज है। अपनी गलती को सुधारने के लिए गुरु का चयन करो,, न कि गुरु को सताने के लिये, न उन पर बोझ बनने के लिये, क्योंकि जीने के लिये खुद की समझदारी ही अहमियत रखती है... अन्यथाः अर्जुन और दुर्योधन के प्रभु और गुरु एक ही थे...! नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

जैन दर्शन में अहिंसा धर्म का पालन करना ही चातुर्मास है

युगल मुनिराजों ने बड़े जैन मंदिर में किया चातुर्मास प्रतिष्ठापन

- मुनिश्री विलोकसागर

मुरैना (मनोज जैन नायक)। जैन साधु साध्वियां पंच महाव्रत अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य का मन वचन काय से निर्दोष रूप से पालन करते हैं। अहिंसा महाव्रत का पूर्ण रूपेण पालन हो, इसीलिए जैन साधु, मुनिराज चातुर्मास करते हैं। बरसात के मौसम में असंख्यात सूक्ष्म जीव उत्पन्न होते हैं, जो दिखाई भी नहीं देते। इन्हीं जीवों की रक्षार्थ जैन साधु मुनिराज वर्षा ऋतु के चार माह पद विहार न करते हुए एक ही स्थान पर चार माह रुककर आत्म साधना करते हैं। स्व कल्याण के साथ-साथ प्राणी मात्र के कल्याण हेतु प्रेरित करते हैं। अहिंसा धर्म का पालन करना ही चातुर्मास का मुख्य उद्देश्य होता है। इन चार माह में सभी साधु साध्वियां पूर्वाचार्यों द्वारा रचित ग्रंथों का स्वाध्याय एवं अध्ययन करते हुए तत्व चिंतन करते हैं। जैन दर्शन में दिगम्बर जैन संत संयम की साधना करते हुए कर्मों को नष्ट करने हेतु तप करते हुए भगवान महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को अंगीकार करते हैं। आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी को श्री जिनेंद्र प्रभु की भक्तियों का वाचन कर कायोत्सर्ग कर चातुर्मास का प्रतिष्ठान किया जाता है और कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को चातुर्मास का निष्ठापन किया जाता है। सभी साधु व्रत उपवास कर सिद्ध भक्ति, आचार्य भक्ति आदि के माध्यम से संकल्पित होकर वर्षाकाल के चार माह एक ही स्थान पर रुककर अपने महाव्रतों का पालन करते हैं। उक्त उद्गार दिगम्बर जैन मुनिराज श्री विलोक सागर महाराज ने बड़े जैन मंदिर में चातुर्मास प्रतिष्ठापन के अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

बड़े जैन मंदिर में युगल मुनिराजों ने किया चातुर्मास प्रतिष्ठापन - प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी संजय भैयाजी (मुरैना वाले) ने बताया कि श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पंचायती बड़ा मंदिर में विराजमान आचार्य विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित आचार्यश्री आर्जव सागर महाराज के शिष्य मुनिश्री विलोकसागरजी एवं मुनिश्री विवोधसागर जी महाराज ने श्री जिनेंद्र भगवान के समक्ष भक्ति एवं निर्जल उपवास करते हुए संकल्प पूर्वक चातुर्मास की स्थापना की।इस अवसर पर सकल दिगंबर जैन समाज मुरैना ने श्रीफल अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया और संकल्प किया कि हम सभी आपकी साधना में निष्ठा, समर्पण, भक्ति के साथ सहभागी बनेंगे। पूज्य युगल मुनिराजों ने सबको आशीर्वाद प्रदान किया।

चातुर्मास साधु और श्रावक दोनों के लिए - विबोधसागर - मुनिश्री विबोध सागरजी महाराज ने बताया कि जैन दर्शन में चातुर्मास साधुओं और श्रावकों दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। यह आत्म -सुधार, धार्मिक गतिविधियों में संलग्नता और आध्यात्मिक विकास, अध्यात्म के प्रति पुरुषार्थ करने का समय होता है। भूलवश, अज्ञानतावश, जाने अनजाने में हमसे जो पाप हुए हैं, उनको नष्ट करने हेतु इन चार माह में प्रभु आराधना का समय होता है चातुर्मास। जैन धर्म में चातुर्मास का विशेष महत्व है, जैन साधु एवं श्रावक वर्षा ऋतु के चार महीनों में तप त्याग संयम की साधना के साथ इसे मनाते है। इस दौरान जैन साधु-साध्वी एक ही स्थान पर रुकते हैं और धार्मिक गतिविधियों जैसे स्वाध्याय, प्रवचन और तपस्या में संलग्न होते हैं। श्रावक (गृहस्थ जैन) भी इस दौरान विशेष रूप से धार्मिक गतिविधियों में भाग लेते हैं, उपवास, प्रतिक्रमण और अन्य धार्मिक कार्यों द्वारा आत्म-सुधार का प्रयास करते हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES

SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD

ANAMICA TRADERS PVT. LTD.

L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

जैना कन्वेंशन 2025 : शामबर्ग कन्वेंशन सेन्टर शिकागो में सम्पन्न

टी. के. वेद मंजु वेद, इन्दौर

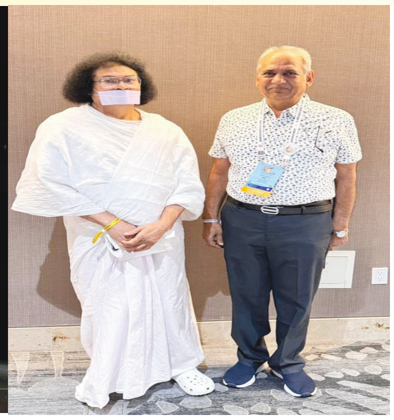

जैना (फेडरेशन ऑफ जैन एसोशिएसन इन नॉर्थ अमेरिका) 72 जैन सेन्टर जो पूरे अमेरिका स्थित है, की पेरेंट बाडी है जिसके लगभग 200000 सदस्य अमेरिका व कनाडा में निवास करते हैं। जैना का उद्देश्य जैन धर्म, संस्कृति व संस्कारों को विकसित करना है। प्रति 2 वर्ष में होने वाला यह 23 वाँ अधिवेशन था एवं इस कन्वेंशन का थीम थारू ''Unity in Diversity – A Path to peace'' अनेकता में एकता शांति का राजमार्ग रहा है।

चार दिवसीय कार्यक्रम अत्यंत गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ, इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संपूर्ण विश्व विशेषकर भारत के महानुभाव, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विज्ञान पुरुष डॉ. आचार्य लोकेश मुनि जी (इंटरफेथ डाइरेक्टर), डा. देवेन्द्र कीर्ति जी, भट्टारक महास्वामी जी हुमचा मठ, डॉ. श्रमण श्रुत प्रग्य जी, डा. श्रमणी प्रतिभा प्रज्ञा जी, डॉ. श्रमणी पूज्य प्रज्ञा जी, श्रमणी आर्जव प्रज्ञा जी, डॉ. श्रमणी स्वाति प्रज्ञा जी, साध्वी शिल्पाजी उपस्थित रहे। मुख्य वक्ताओं में प्रमुख रूप से डॉ. ज्ञान वत्सल स्वामी जी (स्वामी नारायण सेवा संस्था के प्रमुख), श्री विमल शाह, जेसिका कोक्स, सागर सेठ, रुपेश शाह, भाविन शाह उपस्थित रहे।

धार्मिक वक्ताओं में दीपक भाई बरोडीवाला, स्वानुभूति जैन, डा. तेजस साहब, संजय कुमार जैन, शास्त्री विपिन जैन, आचार्य मनीष, रिकि शाह एवं जिनेश शाह, डॉ. अजय सेठ, डॉ. विपिन डोसी, हितेन्द्र गांधी एवं सन्मुख शाह उपस्थित रहे। चार दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिनिधियों ने अपनी दृष्टि से विषयों को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रतिदिन प्रातः 8 से 12 मुख्य पाण्डाल में कार्यक्रम हुए एवं इसके बाद लगभग 14 अलग अलग कार्यशालाओं में लगातार कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रतिनिधिगण अपनी रुचि के विषय की कार्यशालाओं में सम्मिलित हो सकते थे। एक साथ एक ही समय में 7/8 कार्यक्रम अलग-अलग विषयों पर आयोजित किये गए थे। दिन की शुरुआत योग व मेडिटेशन से हुई, इसके बाद हॉल्स में अलग-अलग विषयों पर वर्कशॉप्स आयोजित हुई, जैसे धर्म, शिक्षा, मानवता, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास एवं हर विषय जो आज की आवश्यकता है पर कार्यशाला आयोजित थी जिनमें लगभग 6000 पंजीकृत प्रतिभागियों ने भाग लिया। पंजीयन अगस्त 2024 से ही प्रारंभ हो गया था। यह भी उल्लेखनीय है कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को भी आमंत्रित किया गया था एवं आयोजन कमेटी को माननीय प्रधानमंत्री जी ने लगभग 40 मिनिट का समय देकर पूरे कार्यक्रम की जानकारी ली। मुख्य वक्ता डा. लोकेश मुनि जी ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैन धर्म की प्रासंगिकता पर अपने विचार व्यक्त किये। विश्व तीसरे विश्व युद्ध की ओर अग्रसर है, जैन धर्म के सिद्धान्त ही इस महाविनाश को रोक सकते हैं। स्वामी नारायण संस्था के प्रमुख डॉ. ज्ञान वत्सल स्वामी जी ने जैन धर्म व अन्य धर्मों की एकता एवं समानता पर विचार प्रस्तुत किए। इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय स्तर के 23 वें कन्वेंशन के लिये आयोजन समिति ने 4 दिन का आयोजन उत्कृष्ट ढंग से पूरा किया, इसके अतिरिक्त 7 वर्ष से 13 वर्ष के बच्चों के लिये जैन किड्स कन्वेंशन का 4 दिवसीय आयोजन हुआ जिसमें बच्चों में संस्कार विकास व इससे संबंधित कार्यक्रम संपन्न हुए। इसके अतिरिक्त 'यंग जैना आफ अमेरिका YJA AT JAINA। युवक युवतियों का अधिवेशन भी सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग 500 से अधिक युवक-युवतियों ने भाग लिया। उन्हें उनके अनुसार धार्मिक, सामाजिक, खेल, मानवीय-सेवाओं के कार्यक्षेत्र चुनने का अवसर दिया गया। यह भारत से बाहर रहने वाले युवक-युवतियों को एक प्लेट फार्म पर लाने का बड़ा उपक्रम था जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं भी सम्पन्न हुई जिसमें प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। जैना कन्वेंशन बोर्ड के महारथी जिन्होंने पूरे वर्ष भर सक्रिय रहकर यह कार्यक्रम सम्पन्न करवाया उनमें प्रमुख रहे श्री बिंदेश शाह अध्यक्ष, श्री अतुल शाह, श्री जिग्नेश शाह, श्री विपुल शाह, श्री प्रग्नेश शाह, जैन सेंटर आफ साउथ फ्लोरिडा के सदस्यों का विशेष सहयोग रहा जिसमें प्रमुख रूप से हितेष प्रियंका जैन, अमित अश्विनी लुनावत, विशेष अदिती वेद, सौरभ इतिशा जैन, भव जैन, आरव, वेद, आयरा, वेद, लक्ष, भाई विकास जैन आदि रहे। रात्रीकालीन प्रोग्राम के अन्तर्गत विभिन्न जैन सेन्टर द्वारा तैयार किये गये धार्मिक कथानकों के आधार पर नृत्य नाटिका व प्ले प्रस्तुत किये गये। इण्डियन आयडल के प्रमुख कलाकारों ऋसि सिंह, आर्थव, अविर्भाव, खुशी, अंजना पद्मनाभन द्वारा शानदार प्रस्तुति दी गई। संजना मिश्रा व ओजस रावल की स्टेण्ड अप कामेडी को सर्वत्र सराहा गया।

जैन गाट टैलेंट (JGT) प्रतियोगिता में विभिन्न आयु वर्गों के प्रतिभागियों द्वारा भाग लिया गया, जिसमें सनय लुनावत, चानी जैन इन्दौर को प्रथम पुरस्कार मिला। श्री अभय फिरोदिया जी (फोर्स मोटर्स) द्वारा स्थापित म्युजियम की प्रदर्शनी भी यहां लगाई गई एवं प्रदर्शनी के दर्शकों में से 2 दर्शकों को लाटरी के आधार पर चयनित कर 2 वापिसी टिकिट USA India की संग्रहालय भ्रमण भेंट हेतु की गई, श्री सौरभ इतिशा जैन (इन्दौर) को यह पुरस्कार मिला। अनेकता में एकता का इससे बड़ा कोई उदाहरण हो ही नहीं सकता श्रमण संस्कृति के सभी आम्नायों दिगम्बर श्वेताम्बर मंदिर मार्गिय स्थानकवासी तेरहपंथी सभी ने सामूहिक रुप से बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम में आये अतिथियों को 7 सितारा होटलों में ठहराव एवं सभी के रहने-खाने की उत्कृष्ट व्यवस्था रही। सभी के कार्यक्रम स्थल तक लाने व छोड़ने की उत्तम व्यवस्था की गई। लगभग 6 हजार प्रतिभागियों के दोनों समय भोजन नाश्ता व रात्रि फलाहार की उत्तम व्यवस्था रही। भोजन दिन में व जैन मान्यताओं के अनुसार ही रहा जो प्रशंसनीय है। विभिन्न संस्थाओं की जिसमें जीटो JITO अरिहंत स्कुल, प्रामाणिक ग्रुप, कोजेन ग्रुप, दिगम्बर जैन महासभा मारवाडी ग्रुप आदि की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें सदस्यों को आपस में मिलने का अवसर मिला।

समग्र दृष्टि से यह एक ऐतिहासिक कार्यक्रम रहा। यह पहली बार हुआ कि बिना किसी भेदभाव के यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। सोचने योग्य बात है कि यदि भारत के बाहर रह रहे 2 लाख लोगों की प्रतिनिधि संस्था 6 हजार डेलीगेट्स के साथ एक मंच पर बिना किसी भेदभाव के यह कार्यक्रम कर सकते हैं तो भारत में यह क्यों संभव नहीं।

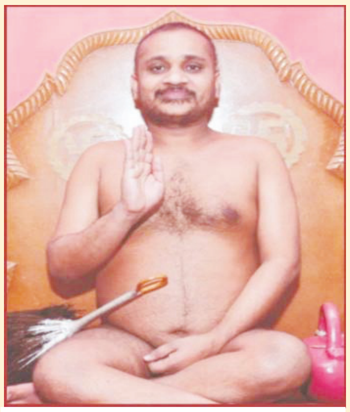

राजकीय अतिथि, कवि, हृदय, वात्सल्य मूर्ति, अभीक्ष्ण ज्ञानपयोगी, आचार्य 108 श्री शशांक सागर जी मुनिराज अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में विराजमान हैं

शशांक वाणी

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण, बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन, ऐसे आचार्य शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत शत नमन

डिप्रेशन से बचने के लिए अध्यात्म विद्या को जीवन में आत्मसात कीजिए

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

1. श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर, जयपुर)
2. पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
3. श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपर)
4. श्रेष्ठी अनूप चंद जैन (भुसावर वाले, जयपुर)
5. श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोलिया (मारूजी का चैक, जयपुर)

1. अरूण कुमार काला अध्यक्ष (कीर्ति नगर जयपुर)
2. अशोक चांदवाड, (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
3. भंवरी देवी काला ध.प. महेन्द्र काला, (स्वर्णपथ मानसरोवर जयपुर)
4. श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
5. प्रेमचन्द सुभाषचन्द लक्ष्मी बगड़ा (नेमीसागर कालोनी, जयपुर)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

उदयपुर में आर्यिकाश्री सुभूषणमति माताजी का मंगल प्रवेश

प्रखर वक्ता चर्या शिरोमणी, गणिनी, आर्यिकारत्न श्री सुभूषणमति माताजी का 41 वां अभिनंदन वषा योग 2025 हेतु भव्य मंगल प्रवेश 2 जुलाई को उदयपुर महानगर के संतोष नगर गारियावास में मेघकुमार देवों द्वारा रिमझिम रिमझिम जलवृष्टि के साथ, गुरु भक्त श्रावक- श्राविकाओं द्वारा भक्ति नृत्य के साथ हुआ। महानगर के मुख्य मार्गो पर अनेक स्वागत द्वार बनाए गए। श्रावक-श्राविकाओं द्वारा अपने-अपने प्रतिष्ठानों को रंगोली द्वारा सजाया गया एवं गुरु मां के दूध व नीर से पाद प्रक्षालन, पुष्प वृष्टि एवं मंगल आरती करते हुए श्री वासुपुज्य दिगंबर जैन बीसपंथी मंदिर संतोष नगर गारियावास में प्रवेश हुआ। नगर प्रवेश पर धर्म सभा को उद्बोधित करते हुए परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ने कहा कि घर में मेहमान आने से पूर्व कितना पुरुषार्थ करते हैं, उससे अधिक प्रयास हमें साधु के नगर प्रवेश पर होना चाहिए। गुरु माँ ने कहा जैसे वर्षा का नीर झरता है वैसे ही गुरु सानिध्य में वर्षायोग में आगम की झमाझम बरसात होगी, बस आपको उसमें अवगाहन करना है। वर्षा का पानी बिना भेद भाव के सब पात्रों का भरता है, अब देखना है आपका पात्र कितना बड़ा है। पात्र बड़ा

होना पर्याप्त नहीं उसके मुंह को खुला छोड़ना पड़ेगा। एक और शर्त है कि पात्र भीतर से खाली होना चिहिए। वर्षायोग में आपको सीखना है स्वयं से स्वयं की परिचय पहचाना है खुद को और जैनत्व के गौरव की रक्षा के लिए आर्ष परंपरा की आन बान शान के लिए अपनी धर्म चेतना को जागृत करना है। गुरु माँ ने प्रवेश के साथ ही भीतर पड़े अपविष्ट को निकालना प्रारंभ कर दिया। भक्तों का उत्साह चरम पर था, सभी ने गुरु मां के जयकारों से धरती आसमान एक कर दिए।

सुरेश कुमार जी पाटनी एवं श्रीमती शांता देवी पाटनी के विवाह की 50वीं सालगिरह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न

आर. के. मार्बल्स के श्री सुरेश कुमार जी पाटनी एवं श्रीमती शांता देवी पाटनी के विवाह की 50वीं सालगिरह पर मदनगंज-किशनगढ़ में श्री आदिनाथ मंदिर में ऐतिहासिक सिद्धचक्र विधान का आयोजन किया गया, जो पूरे अष्टान्हिका पर्व पर हर्षोल्लास के साथ हुआ। ज्ञात रहे कि आदिनाथ मंदिर में सायंकाल प्रतिदिन भक्तामर विधान का आयोजन किया जाता है। इस आयोजन के तहत चित्र में भक्तामर का दीप प्रज्वलन करते हुये किशनगढ़ के धर्मात्मा, व्यवहार कुशल, मुनिभक्त राजकुमार दोषी व चन्द्रप्रकाश वेद।

– शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

50 वीं सालगिरह

श्रीमती बीना देवी पाटनी पत्नी शेखरचंद पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, श्री सुरेश जी पाटनी एवं श्रीमती शांता देवी पाटनी के 50वीं विवाह की सालगिरह पर ऐतिहासिक सिद्धचक्र विधान आदिनाथ मंदिर में हो रहा है, उसके दर्शन कर अत्यंत प्रमुदित हुई।

21 जुलाई को सलूंबर में आयोजित होगा जैन ज्योतिष द्वारा समस्या समाधान का भव्य कार्यक्रम

भारत गौरव, राष्ट्रसंत, आचार्य श्री 108 विहर्ष सागर जी महामुनिराज का इस वर्ष 2025 का चातुर्मास राजस्थान की धर्म नगरी सलूंबर में होने जा रहा है। जिसके अंतर्गत 20 जुलाई दिन रविवार को मंगल कलश स्थापना का आयोजन किया जाएगा।

21 जुलाई को आदिनाथ चैनल फेम, दुबई, अबू धाबी, नेपाल में सम्मानित, विहर्ष ज्योतिष रत्न, प्रख्यात जैन ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुविद रवि जैन गुरुजी दिल्ली के द्वारा जैन ज्योतिष समस्या समाधान का आयोजन दोपहर 1:00 बजे से किया जाएगा।

अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि जैन गुरुजी दिल्ली को भारत गौरव, राष्ट्र संत, आचार्य श्री 108 विहर्ष सागर जी महाराज के द्वारा 2017 में भव्याति भव्य कार्यक्रम में लगभग 5000 से अधिक जनसमूह के बीच 'विहर्ष ज्योतिष रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया था।

कार्यक्रम में आप स्वयं जान सकते हैं कि क्या आप मांगलिक हैं, अपनी कुंडली से जाने कब होगा आपका भाग्य उदय, स्वयं देखें कुंडली में कालसर्प दोष और उसका निवारण, साथ ही अन्य ज्योतिषी जिज्ञासाओं का समाधान भी जैन आगम के द्वारा किया जाएगा।

इस अवसर पर लकी ड्रा के माध्यम से रवि जैन गुरुजी से निशुल्क कुंडली विश्लेषण का भी सौभाग्य प्राप्त होगा।

इस अवसर पर श्री सुरेंद्र कुमार जैन ज्योतिषाचार्य सलूंबर, डॉ. सुमेर चन्द जैन प्राकृताचार्य दिल्ली, पं. राजेंद्र प्रसाद जैन ज्योतिषाचार्य उदयपुर, श्रीमती मीनाक्षी जैन ज्योतिषाचार्य उदयपुर, श्री सुशील कुमार जैन ज्योतिषी दिल्ली, श्री जगदीश प्रसाद जैन शिक्षाविद दिल्ली, श्रीमती शिवानी जैन शिक्षाविद दिल्ली, श्री गजेंद्र जैन पटवा धरियावद की गरिमामयी उपस्थित रहेगी।

इस कार्यक्रम में मंच संचालन डी. के. जैन दिल्ली करेंगे। इस कार्यक्रम का निर्देशन बाल ब्रह्मचारी रीना दीदी करेगी।

इस कार्यक्रम के आयोजक मुनि संघ सेवा समिति एवं सकल दिगंबर जैन समाज सलूंबर रहेंगे।

SHRINIWASA
GROUP OF COMPANIES
TOTAL LOGISTIC SOLUTIONS

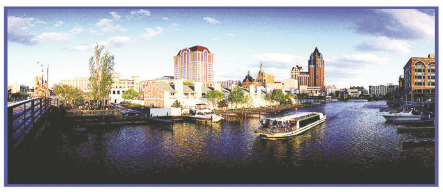

Shriniwasa Roadways (P) Ltd
Total Logistic Solutions
SHRINIWASA MARKETING & LOGISTICS PVT LTD
SHRINIWASA ROAD CARRIERS (P) LTD
SOUTHERN CONTAINER LEASING COMPANY
Connecting You to The Future
Corp. Off. 135, Poonamalee High Road, "Sapna Trade Centre" 5th Floor, Puruswalkam, Chennai - 600 084.
Phone No. : 40409900 (50 Lines) Email : chennai@shriniwasa.com Web : www.shriniwasa.com
Northern Regional off : 4743/23. Ansari Road, Daryaganj 2nd Floor, New Delhi 110 002. Tel : 011 49400400(30Lines)
East Zone Calcutta : (03) 2259 0223, West Zone Mumbai : (022) 27842959

टोंक में चातुर्मास कर रहे

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009

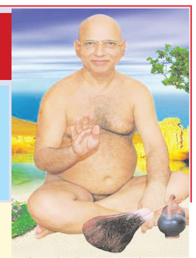

Jain Group

ब्राह्मण एवं जैन परिवार करा रहा जैन आचार्य का चातुर्मास

परतापुर। वागड़ ही नहीं, राजस्थान और देश के इतिहास में यह पहला मौका है जब एक ब्राह्मण परिवार ने जैन संतों के चातुर्मास की भावना व्यक्त की। साधु सेवा संस्था के परतापुर निवासी संजय एन. दोसी ने बताया कि भीलूड़ा के शैलेन्द्र भट्ट की भावना लंबे समय से थी कि वे अपने बनाए शिवगौरी आश्रम में जैन संतों का चातुर्मास कराएं। इसके बाद संजय दोसी और शैलेन्द्र भट्ट ने मिलकर गणाधिपति गणधराचार्य कुंथूसागर ऋषिराज के ज्येष्ठ श्रेष्ठ सुशिष्य, सरस्वती पुत्र, पूज्यपाद वैज्ञानिक धमार्चार्य कनकनंदी गुरुराज से शिवगौरी आश्रम में चातुर्मास के लिए निवेदन किया। साधु सेवा संस्था के चिंतन दोसी और चिराग दोसी ने बताया कि कई बार विनती करने के बाद वैज्ञानिक धमार्चार्य कनकनंदी गुरुराज ने वर्ष 2025 का चातुर्मास भीलूड़ा के गणेशपुरी स्थित प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर एकांत साधना योग्य शिवगौरी आश्रम में सादगी से करने का

निर्णय लिया। सूचना मिलते ही भिलूड़ा निवासी शैलेन्द्र भट्ट और समस्त ब्राह्मण समाज ने हर्ष व्यक्त किया। शैलेन्द्र भट्ट और संजय दोसी ने योगेन्द्रगिरि अतिशय क्षेत्र सागवाड़ा में मुनि संघ को श्रीफल भेंट किया। इसके बाद मुनि संघ का विहार योगेन्द्रगिरि से भिलूड़ा की ओर चातुर्मास के लिए हुआ, इस चातुर्मास में शैलेन्द्र भट्ट, सारिका भट्ट परिवार द्वारा शिवगौरी आश्रम और अन्य सेवाएं दी जाएंगी। परतापुर निवासी संजय दोसी पुत्र नथमलजी दोसी परिवार के मैना दोसी, निरादेवी दोसी, चिंतन दोसी, मुक्ति दोसी, चार माह तक साधु-संतों के लिए आहार चर्या और धार्मिक आयोजन कराएंगे। वैज्ञानिक धमार्चार्य कनकनंदी गुरुराज का 7 जुलाई को प्रातः भिलूड़ा से शिवगौरी आश्रम में चातुर्मास मंगल प्रवेश हुआ। 9 जुलाई को सांय मंगल कलश स्थापना की गई। यह पहला चातुर्मास है जिसमें ब्राह्मण परिवार द्वारा संतों के ठहरने की व्यवस्था और अन्य सेवाएं दी जा रहीं हैं।

विजयनगर में आचार्य विनम्र सागरजी ससंघ का चातुर्मास हेतु भव्य मंगल प्रवेश

इंदौर। विजयनगर एवं पूर्व उत्तर जैन समाज के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण एवं धर्ममय क्षण रहा, जब परम पूज्य उच्चारणाचार्य मुनिश्री 108 विनम्र सागर जी महाराज ससंघ अपने 17 साधु- संतों के साथ विजयनगर पंचबालयती मंदिर में भव्य चातुर्मास हेतु पधारे।

राहुल जैन एवं धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने **कहा कि यह दिव्य मंगल जुलूस प्रातः** तिलकनगर से प्रारंभ हुआ। सबसे पहले गुरुदेव ससंघ कनाड़िया जैन मंदिर पहुँचे, जहाँ भगवान के दर्शन व पूजा - अर्चना संपन्न हुई। वहाँ समाजजनों ने मंगल कलशों के साथ भव्य अगवानी की। इसके पश्चात शोभायात्रा जावरा वाला मंदिर पहुँची, जहाँ श्रद्धालुओं ने पाद प्रक्षालन कर पूज्य गुरुदेव का अभिनंदन किया। दद्दू ने बताया कि फिर शोभायात्रा एल. आई. जी. क्षेत्र से होकर आगे बढ़ी, जिसमें भोपाल युवा मंडल का बैंड, उड़ीसा जैन समाज का विशेष सांस्कृतिक बैंड तथा इंदौर का प्रसिद्ध श्याम बैंड शामिल रहे। इन तीनों बैंडों की

मनमोहक धुनों ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया और शोभायात्रा को अद्वितीय भव्यता प्रदान की। शोभायात्रा मार्ग में श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से भव्य अगवानी की। इसके पश्चात संघ आगे बढ़ते हुए विजय नगर पंचबालयती मंदिर पहुँचा। विजयनगर में आचार्य श्री की प्रथम चरण रज प्राप्त करने हेतु समाजजनों में अपार उत्साह देखा गया। सैकड़ों नर-नारियों ने हाथ जोड़कर श्रद्धा पूर्वक स्वागत किया। मार्ग भर समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा स्वागत मंच लगाए गए थे। जगह-जगह महिलाओं ने मंगल कलश लेकर आगवानी की, तो युवाओं ने जयकारों और भजनों से वातावरण को धर्मरस में सराबोर कर दिया। इस भव्य मंगल अगवानी में मध्य प्रदेश शासन के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, इंदौर विधायक श्री रमेश मेंदोला, नगर अध्यक्ष श्री सुमित मिश्रा, सभापति श्री मुन्नालाल यादव, श्री राजेन्द्र राठौर, एमआईसी सदस्य श्री टीनू जैन एवं श्री हरिनारायण यादव सहित अनेक वरिष्ठ जनप्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी एवं प्रमुख नेता गण उपस्थित रहे। सभी ने श्रद्धा एवं धार्मिक भावनाओं के साथ गुरुदेव की आगवानी कर आयोजन की गरिमा को और अधिक बढ़ाया।

इस अवसर पर अनेक प्रमुख समाजसेवी एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। जुलूस प्रभारी श्री जिनेश झांझरी, अक्षय कसलीवाल एवं राजीव निराला ने अत्यंत समर्पण भाव से अपनी जिम्मेदारियाँ निभाई। इसके पश्चात गुरुदेव ससंघ विजय नगर पंच बाल्यती मंदिर पधारे, जहाँ श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से पूजन-विधि संपन्न की।

गुरुदेव की पूजा का सौभाग्य विजय नगर, महालक्ष्मी नगर, तुलसी नगर, 78 जैन मंदिर एवं सुखलिया क्षेत्र की महिला मंडलों को प्राप्त हुआ, जिन्होंने समर्पण भाव से पूजन कर धर्मलाभ लिया। दीप प्रज्वलन के साथ धर्मसभा का शुभारंभ हुआ, ब्रह्मचारी सुरेश मलैया, जिनेश मलैया, हर्ष जैन, रिद्दी सिद्दी, नकुल पटौदी देवेंद्र सेठी, प्रकाश अभिनंदन जैन इसके बाद विजय नगर महिला मंडल द्वारा मधुर मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया, जिसने वातावरण को पूर्ण भक्ति रस में सराबोर कर दिया। गुरुदेव के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य भारत मोदी, मुकेश पटौदी, नवीन गोधा एवं हर्ष जैन सचिन उद्योगपति परिवार को प्राप्त हुआ। शास्त्र भेंट का पुण्य कार्य आर. के. जैन, राजेश जैन, विनोद जैन एवं सुखलिया परिवार द्वारा संपन्न हुआ। मंच संचालन की भावपूर्ण भूमिका प्रदीप शास्त्री, डी. के. जैन द्वारा निभाई गई। आभार धर्मेंद्र सिनकेम ने सभी समाज का किया। यह आयोजन न केवल एक धार्मिक अवसर था, बल्कि समाज की एकता, श्रद्धा एवं सेवा भावना का भी जीवंत प्रतीक बन गया। राहुल जैन ने कहा कि चातुर्मास कलशों की स्थापना 13.07.25 रविवार को हुई।

आचार्य श्री विराग सागर जी के प्रथम समाधि दिवस पर डाक विभाग द्वारा जारी किया गया विशेष आवरण

इंदौर। श्रमणं संस्कृति के विशाल संघ नायक, 500 से अधिक शिष्य प्रशिष्य के संघ के नायक एवं दिशा-निर्देशक, 250 से अधिक साधु-संतों व त्यागी वृतियों की समाधि के सानिध्य प्रदाता एवं स्वयं भी उत्कृष्ट समाधि के धारक गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के प्रथम समाधि दिवस महोत्सव पर 4 जुलाई शुक्रवार को प्रातः 09.00 बजे फिलेटेलिक ब्यूरो इंदौर जीपीओ में भारतीय डाक विभाग द्वारा परम पूज्य गुरुदेव विराग सागर जी पर एक सुंदर विशेष आवरण जारी किया है। उक्त जानकारी देते हुए वर्धमानपुर शोध संस्थान प्रमुख एवं वरिष्ठ फ्लिटेलिस्ट ओम पाटोदी एवं धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि यह विशेष आवरण मुख्य डाक घर में आचार्य श्री विभव सागर जी के मार्गदर्शन एवं वरिष्ठ फिलेटेलिस्ट जयंत डोसी

के सक्रिय सहयोग से श्री शिवांसु कुमार अधीक्षक डाकघर इंदौर नगर संभाग के मुख्य आतिथ्य, श्री प्रवीण कुमार श्रीवास्तव सहायक निदेशक द्वितीय क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर परिक्षेत्र इंदौर एवं श्री लक्ष्मीकांत जैन जी वरिष्ठ फ्लिटेलिस्ट इंदौर के विशेष आतिथ्य में जारी किया। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजजन, पोस्टमास्टर, बाफना जी, वरिष्ठ फिलेटेलिस्ट श्री रविन्द्र जी पहलवान, अग्रवाल जी, मेहता जी, राजेश शाह, ओम पाटोदी आदि उपस्थित थे। इस उपलब्धि पर दिगम्बर जैन समाज के वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. जैनेन्द्र जैन, विश्व जैन संगठन इंदौर के अध्यक्ष मयंक जैन, महावीर ट्रस्ट के अध्यक्ष अमित कासलीवाल, हंसमुख गांधी, टी. के वेद आदि समाज जन ने डाक तार विभाग का आभार व्यक्त किया।

लुधियाना की अनन्या जैन ने किया CUET UG में टॉप

लुधियाना (पंजाब)। लुधियाना के डीएवी स्कूल की छात्रा अनन्या जैन ने CUET UG 2025 में ऑल इंडिया टॉप किया है। देशभर से 13.5 लाख उम्मीदवारों ने ये परीक्षा दी थी। बेटी की इस कामयाबी से परिवार वाले गदगद हैं। अनन्या जैन ने अपनी सफलता का श्रेय अपनी मां को दिया। अनन्या ने अकाउंटेंसी, बिजनेस स्टडीज, इकोनॉमिक्स और गणित में 100 पर्सेंटाइल, अंग्रेजी में 99.99 पर्सेंटाइल और 1225.93 का

संचयी स्कोर हासिल किया। अनन्या ने मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि वो रोजाना 2 घंटे अंग्रेजी की पढ़ाई करती थी। उन्होंने बताया कि वह दिल्ली यूनिवर्सिटी में इकोनॉमिक्स की पढ़ाई के लिए आगे जाएगी। वहीं अनन्या के माता-पिता ने कहा कि वह हमेशा ही उसे पढ़ाई के लिए कहते थे और कभी भी उससे घर का काम नहीं करवाया जाता था।

संपादकीय

जैन परम्परा में चातुर्मास एक विश्लेषण

चातुर्मास की परिभाषा - वर्ष के बारह महिनों को छह ऋतुओं में विभाजित किया गया है। यथा- 1. बसंत ऋतु (चौत्र वैशाख), 2. ग्रीष्म ऋतु (ज्येष्ठ-आषाढ़), 3. वर्षा ऋतु (श्रावण भाद्रपद), 4. शरद ऋतु (आश्विन - कार्तिक), 5. हेमन्त ऋतु (मार्ग शीर्ष पौष), 6. शिविर ऋतु (फाल्गुन माह) तथा वर्ष को मौसम की दृष्टि से प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया गया है। यथा-1. ग्रीष्म (चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़), 2. वर्ष (श्रावक, भाद्रपद, आश्विन तथा कार्तिक), 3. शीत (मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन)। यद्यपि ये तीनों ही विभाजन चार-चार माह के हैं किन्तु वर्षाकाल के चार महीनों का एकत्र नाम चातुर्मास या वर्षावास आदि रूप में प्रसिद्ध है।

चातुर्मास के महत्व - जैन श्रमण परम्परा में चातुर्मास का अत्यन्त महत्व है। यह आध्यात्मिक जागृति का महापर्व है, जिसमें स्व परहित साधन का अच्छा अवसर प्राप्त होता है। यही कारण है कि वर्षावास को मुनिचर्या का अनिवार्य अंग और महत्वपूर्ण योग माना गया है। इसीलिये इसे वर्षायोग अथवा चातुर्मास भी कहा जाता है। भगवती अराधना में लिखा है कि 'वर्षाकालस्य चतुर्षुमासेषु एकत्रैवावस्थानं भ्रमण त्यागः': अर्थात वर्षाकाल के चार महीनों में साधुओं को भ्रमण का त्याग करके एक स्थान पर रहने का विधान किया गया है। इसे श्रमण के दस स्थितिकल्पों में अन्तिम पर्युषणा कल्प के नाम से अभिहित किया गया है। 'वृहतकल्पभाष्य' में इसे 'संवत्सर' कहा गया है। वर्षाकाल में आकाश मण्डल में घटायें छाई रहती हैं तथा प्रायः वर्षा भी निरंतर होती रहती है। इससे यत्र-तत्र भ्रमण तथा विहार के मार्ग रुक जाते हैं, नदी नाले उमड़ जाते हैं। वनस्पति काय आदि हरित काय मार्ग और मैदानों में फैल जाते हैं। सूक्ष्म स्थूल जीव-जन्तु उत्पन्न हो जाते हैं। अतः किसी भी परजीव की विराधना तथा आत्म विराधना से बचने के लिए श्रमण धर्म में वर्षाकाल में एकत्र वास का विधान किया गया है। यही समय एक स्थान पर स्थिर रहने का सबसे उत्कृष्ट समय होता है।

श्रमण और श्रावक दोनों के लिये इस चातुर्मास का धार्मिक तथा आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से महत्व है। इसीलिये श्रमण या उनके संघ के श्रावक चातुर्मास या वर्षायोग को सर्व प्रकारेण प्रिय और हितकारी अनुभव करते हैं।

चातुर्मास का औचित्य - आचारांग में कहा है कि वर्षाकाल आ जाने पर बहुत से प्राणी उत्पन्न हो जाते हैं, बहुत से बीज अंकुरित हो जाते हैं, मार्गो में बहुत से बीज उत्पन्न हो जाते हैं, बहुत हरियाली उत्पन्न हो जाती है। ओस और पानी बहुत स्थानों में भर जाता है। पांच प्रकार की काई आदि स्थान-स्थान पर व्याप्त हो जाती है। बहुत से स्थानों पर कीचड़ या पानी से मिट्टी गीली हो जाती है, मार्ग पर चला नहीं जा सकता। मार्ग सूझता नहीं है। अतः इन परिस्थितियों को देखकर मुनि को वर्षाकाल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम विहार नहीं करना चाहिए। अपराजित सूरि ने कहा है कि वर्षा काल में स्थावर और जंगल सभी प्रकार के जीवों से यह पृथ्वी व्याप्त रहती है। उस भ्रमण करने पर महान असंयम होता है। वर्षा और शीत वायु (झंझावात) से जीवों की विराधना होती है। वायों आदि जलाशयों में गिरने का भय रहता है। बृहत कल्प भाष्य के अनुसार श्रमण को प्रत्येक कार्य करते समय अहिंसा और विवेक दृष्टि रखना अनिवार्य है। वर्षाकाल के चार माह तक एक स्थान पर स्थिर रहकर वर्षायोग धारण करने का विधान है। जैन परम्परा के साथ ही प्रायः सभी भारतीय परम्पराओं धर्मो में साधुओं को वर्षाकाल के चार माह में एक स्थान पर स्थित रहकर धर्म साधन करने का विधान है।

वर्षायोग ग्रहण एवं उसकी समाप्ति यद्यपि मूलाचार आदि ग्रन्थों में वर्षायोग ग्रहण आदि की विधि का स्पष्ट उल्लेख नहीं है किन्तु उत्तरवर्ती ग्रन्थ 'अनगार धर्मामृत' में कहा है कि आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी या पूर्णमासी के दिन पूर्व आदि चारों दिशाओं में प्रदक्षिणा क्रम से लघु चैत्यभक्ति चार बार पढ़कर सिद्ध भक्ति, योगी भक्ति, पंचगुरु भक्ति और शांति भक्ति करते हुये आचार्य आदि साधुओं को वर्षायोग ग्रहण करना चाहिये। जहाँ चातुर्मास करना अभीष्ट हो, वहाँ आषाढ़ मास में वर्षायोग के स्थान पर पहुँच जाना चाहिये तथा मार्गशीर्ष महीना बीतने पर वर्षायोग के स्थान को छोड़ देना चाहिये। कितना ही प्रयोजन होने पर भी वर्षायोग के स्थान में श्रावक कृष्णा चतुर्थी तक अवश्य पहुँच जाना चाहिये। इस तिथि का उल्लंघन नहीं करना चाहिये तथा कितना ही प्रयोजन होने पर भी कार्तिक शुक्ला पंचमी तक वर्षायोग के स्थान से अन्य स्थान को नहीं जाना चाहिये। अति किसी दुर्निवार उपसर्ग आदि के कारण वर्षायोग के उत्तम प्रयोग में अतिक्रम करना पड़े तो साधु को प्रायश्चित लेना चाहिये।

वर्षावास का समय - वर्षा के समय में एक सौ बीस दिन तक एक स्थान पर रहना उत्सर्ग मार्ग है। विशेष कारण होने पर अधिक और कम दिन भी ठहर सकते हैं। अर्थात् आषाढ़ शुक्ला दशमी से चातुर्मास करने वाले कार्तिक का पूर्णमासी के बाद तीस दिन तक आगे भी सकारण एक स्थान पर ठहर सकते हैं। अधिक ठहरने के प्रयोजनों में वर्षा की अधिकता, शास्त्राभ्यास, शक्ति का अभाव अथवा किसी की वैयावृति करना आदि है। आचारांग में भी कहा है कि वर्षाकाल के चार माह बीत जाने पर अवश्य विहार कर देना चाहिए। यह तो श्रमण का उत्सर्ग मार्ग है। फिर भी यदि कार्तिक मास में पुनः वर्षा हो जाये और मार्ग आवागमन के योग्य न रहे तो चातुर्मास के पश्चात वहां पन्द्रह दिन आकर रह सकते हैं। वृहत कल्प भाष्य में वर्षावास समाप्ति कर विहार करने के समय के विषय में कहा है कि जब ईख बाड़ों के बाहर निकलने लगे, टुम्बियों में छोटे-छोटे तुंबक लग जायें, बैल शक्तिशाली दिखने लगे, गाँवों की कीचड़ सूखने लगे, रास्तों का पानी कम हो जाये, जमीन की मिट्टी कड़ी हो जाये तथा जब पथिक परदेश को गमन करने लगे तो श्रमणों को भी वर्षावास की समाप्ति और अपने विहार का समय समझ लेना चाहिये।

वर्षावास योग्य स्थान - श्रमण को वर्षायोग के धारण का उपयुक्त समय जानकर और चर्या आदि के अनुकूल प्रासुक स्थान पर चातुर्मास व्यतीत करना चाहिये। आचारांग सूत्र में वर्षावास योग्य स्थान के विषय में कहा है कि वर्षावास करने वाले साधु या साध्वी को उस ग्राम, नगर, आश्रम, सन्निवेश या राजधानी की स्थिति भलीभांति जान लेनी चाहिये। कल्पसूत्र - कल्पलता के अनुसार वर्षावास के योग्य स्थान में निम्नलिखित गुण होना चाहिये- जहाँ विशेष कीचड़ न हो, जीवों की अधिक उत्पत्ति न हो, शौच स्थल निर्दोष हो, रहने का स्थान शांतिप्रद एवं स्वाध्याय योग्य हो, गोरस की अधिकता हो, जनसमूह भद्र हो, राजा धार्मिक वृत्ति का हो, भिक्षा सुलभ हो, श्रमण ब्राह्मण का अपमान न होता हो आदि।

वर्षावास में भी विहार करने के कारण - अपराजित सुरि के अनुसार वर्षायोग धारण कर लेने पर भी यदि दुर्भिक्ष पड़ जाये, महामारी फैल जाये, गाँव अथवा प्रदेश में किसी कारण से उथल-पुथल हो जाये, गच्छ का विनाश होने के निमित्त मिल जायें तो देशान्तर में जा सकते हैं, क्यों कि ऐसी स्थिति में वहाँ ठहरने से रत्नत्रय की विराधना होगी। आषाढ़ की पूर्णमासी बीतने पर प्रतिपदा आदि के दिन देशान्तर गमन कर सकते हैं। स्थानांग सूत्र में इसके पांच कारण बताये हैं। 1. ज्ञान के लिए 2. दर्शन के लिए 3. चारित्र के लिए 4. आचार्य या उपाध्याय की मृत्यु के अवसर पर तथा 5. वर्षा क्षेत्र के बाहर रहते हुए आचार्य अथवा उपाध्याय की वैयावृत करने के लिए और भी कहा है कि निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को चातुर्मास के पूर्वकाल में ग्रामानुसार विहार नहीं करना चाहिये। किन्तु इन पांच कारणों से विहार किया भी जा सकता है- 1. शरीर उपकरण आदि के अपहरण का भय होने पर 2. दुर्भिक्ष होने पर 3. किसी के द्वारा व्यथित किये जाने पर अथवा ग्राम से निकाल दिये जाने पर 4. बाढ़ आ जाने पर तथा 5. अनार्यो द्वारा उपद्रव किये जाने पर।

इस प्रकार वर्षावास के विषय में जैन आचार शास्त्रों में यह विवेचन प्राप्त होता है। श्रमण के वर्षावास का समय कषाय रूपी अग्नि को एवं मिथ्यात्व रूपी ताप को त्याग एवं वैराग्य की शीतल धारा से तथा स्वाध्याय और ध्यान की जलदृष्टि से उसी प्रकार शांत करने का है, जिस प्रकार जल की शीतल धारा बरस कर धरती की तपन शांत करती है। समाज व साधु का सिंधु व बिन्दु जैसा सम्बंध है। आचार्य शांति सागर जी कहा करते थे कि साधु व समाज का कैसा सम्बंध होता है - आहार ग्रहण करते समय साधु का हाथ नीचे होता है, दाता का ऊपर। आहार ग्रहण के बाद दाता या ग्रहस्थी का हाथ नीचे व साधु का आशीर्वाद के रूप में ऊपर रहता है। कभी दाता का हाथ ऊपर तो कभी साधु का हाथ ऊपर, जब तक यह सम्बंध है, तब तक समाज बंधा हुआ है, दोनों का एक दूसरे पर अनुशासन है। जब इसका सम्बंध टूट जायेगा तो समाज बिखर जायेगा। आदर्श का अर्थ है दर्पण, जब दर्पण स्वच्छ होता है तो चेहरा साफ दिखाई देगा। साधु संस्था पवित्र होगी तो समाज आदर्श बनेगा, समाज व धर्म को बनाने हेतु गृहस्थ चिन्तन करें ताकि हम एक आदर्श समाज का निर्माण करने में सफल हों।

- कपूर चन्द जैन पाटनी,
प्रधान सम्पादक

'संत निवास' - नामकरण से पूर्व जरा सोचें ?

प्रो. अनेकान्त कुमार जैन
नई दिल्ली

अक्सर कई तीर्थों आदि धार्मिक स्थानों पर जाने का अवसर प्राप्त होता है। विगत् वर्षों में एक नई परंपरा विकसित हुई दिखलाई देती है और वह है - संत निवास, संत निलय, संत भवन, संतशाला आदि आदि नामों से कई इमारतों का निर्माण।

हमें गंभीरता पूर्वक विचार करना चाहिए कि हमारे साधु संत उन भवनों में मात्र कुछ दिन या कुछ माह ही प्रवास करते हैं, न कि निवास करते हैं तब अनगारी साधु संतों के आगारत्व को साक्षात् प्रदर्शित करता यह नामकरण कहाँ तक उचित है ? फिर उसमें AC कूलर फिट करवाते हैं। अन्य समय में वर्ष भर उस भवन का अन्यान्य सामाजिक कार्यों में उपयोग भी कर लेते हैं लेकिन उस भवन का नामकरण संत निवास कर देते हैं।

यहाँ अच्छे भवन निर्माण का निषेध नहीं किया जा रहा है और न ही इस बात का निषेध किया जा रहा है कि उसमें साधु संतों का अल्प प्रवास हो, यहाँ प्रश्न सिर्फ इतना है कि नामकरण उनके नाम पर क्यों ?

और भी बहुत दार्शनिक और साहित्यिक नाम जैसे 'अहिंसा भवन', 'प्राकृत भवन', 'समयसार भवन', अनेकान्त भवन, तत्त्वार्थ सूत्र निलय, अनुप्रेक्षा भवन, स्याद्वाद निलय आदि आदि अनेक प्रकार से नामकरण किया जा सकता है और अनगारी को सागारी कहने के दोष से भी बचा जा सकता है।

यद्यपि अपरिग्रह महाव्रत के धारी वीतरागी मुनिराजों के ठहरने के एक मात्र उद्देश्य से भवनों का निर्माण भी उचित नहीं है क्योंकि जिस प्रकार उनके निमित्त से आहार नहीं बनता उसी प्रकार वसतिका भी नहीं बनती है।

कोई भी जैन मुनिराज उद्दिष्ट आहार और वसतिका आदि के त्यागी होते हैं। भगवती आराधना की टीका (गाथा 421/613/8) में लिखा है - श्रमणानुद्दिश्य कृतं भक्तादिकं उद्देसिगमित्युच्यते। अर्थात् मुनि के उद्देश्य से किया हुआ आहार, वसतिका वगैरह को उद्देशिक कहते हैं।

पद्मपुराण (सर्ग 4/95) में एक प्रसंग आया है जहाँ मुनिराज ऋषभदेव कहते हैं - इत्युक्तें भगवानाह भरतेयं न कल्पते। साधूनामीदृशी भिक्षा या तदुद्देशसंस्कृता।। भगवान् ने कहा कि हे भरत! जो भिक्षा मुनियों के उद्देश्य से तैयार की जाती है, वह उनके योग्य नहीं है-मुनिजन उद्दिष्ट भोजन ग्रहण नहीं करते। यही बात आवास के लिए भी है।

भगवती आराधना (विजयोदया टीका 230/443/13) में स्पष्ट उल्लेख है - निर्ग्रंथानामेवेति सा उद्देसिगा वसदिति भण्यते। अर्थात् निर्ग्रंथ मुनि आवेंगे उन सब जनों को यह वसति होगी, इस उद्देश्य से बाँधी गई वसतिका उद्देशिक दोष से दृष्ट है।

अतः स्पष्ट है कि श्रावक समाज भवन आदि का निर्माण अपने लिए या समाज के लिए करता है, साधु संतों के लिए नहीं। अतः इस प्रकार का नामकरण करके दोनों के दोषों को वृद्धिंगत करने का कोई औचित्य नहीं है।

यह अन्य भारतीय धार्मिक परंपराओं के प्रभाव और उनके अंधानुकरण के कारण हो रहा है। वहाँ तो आलीशान होटलों के नाम तक संत निवास है और उनकी ऑनलाइन बुकिंग भी होती है, फिर भी यहां सिर्फ शब्द प्रयोग के विवेक की दृष्टि से बात कही जा रही है क्योंकि अन्य परंपराओं से जैन संस्कृति का अपना एक अलग वैशिष्ट्य है। अतः जितना हो सके, जहाँ तक हो सके अपनी शाश्वत पहचान को बचाने का प्रयास युक्ति पूर्वक अवश्य करना चाहिए।

इस विषय पर मेरा एक प्रस्ताव है कि जहाँ जहाँ भी इस नाम से भवन निर्मित हैं वहाँ वहाँ स्वतः ही नाम परिवर्तित कर उसका नाम एकरूपता से 'प्राकृत भवन' रख देना चाहिए। इससे हमारे आगमों की भाषा 'प्राकृत' की प्रसिद्धि भी होगी और फिर प्रयोग में यह अर्थ भी रूढ़ हो जाएगा कि जो सहज प्राकृतिक साधना करते हैं ऐसे वीतरागी साधकों के अनुकूल अल्प प्रवास का स्थान। वर्तमान समय में संतुलन हेतु यह समाधान किया जा सकता है।

जिज्ञासा समाधान से

मुनिपुंगव सुधासागर जी महाराज

➲ भारत के हर गांव का एक ही अभियान होना चाहिए - हमारे गाँव का गौवंश हमारे गाँव की सीमा में ही प्राण त्यागेगा। कसाई के हाथ से हमारे गौवंश की मौत नहीं होना चाहिए। यदि यह अभियान आपने चला लिया तो बूचड़खाने कानून से तो अपन बंद नहीं करा पाएंगे लेकिन हमारे इस संकल्प से भारत के बूचड़खाने बंद जरूर हो जायेंगे।

➲ सदा से धर्मनीति के साथ राजनीति और राजनीति के साथ धर्मनीति रही है।

धर्म, राजनीति के बिना सुरक्षित नहीं रह सकता और राजनीति, धर्म के बिना संस्कारित नहीं रह सकती। धर्म विहीन राजनीति स्व व पर दोनों का नाश कर देती है। धर्म सहित राजनीति, राजनीति को एक आदर्श रूप देकर राष्ट्र की ऊंचाइयाँ प्राप्त कराती है। हम उसका सहयोग कर सकते हैं लेकिन किसी कारण से सहयोग नहीं कर रहे हैं तो यह बेईमानी होगी। सहयोग कर ही नहीं सकते हैं लेकिन वो सहयोग मांग रहा है तो यह बेईमानी नहीं, मजबूरी होगी। जहां पर तुम्हारी स्थिति बनती है, वहां पर सहयोग देने का भाव करो।

➲ तुरंत के तुरंत भी फल मिलता है लेकिन कभी-कभी कोई ऐसा कर्म बांध लेता है कि इसको अभी फल देंगे तो इतना दंडित नहीं कर पाएंगे, मर जायेगा, सुसाइड कर लेगा इसलिए कर्म उसे ऐसी दुर्गति में ले जाता है कि जहाँ मरना भी चाहे तो नहीं मर सकता, उसे अगले भव में नारकादि की गति प्राप्त कराके जीवन भर उसको दुःख देता है क्योंकि वहाँ मरने की कोई व्यवस्था नहीं। ऐसे ही तुमने इतना पुण्य कर्म किया है कि वर्तमान में तुम्हारी मनुष्य पर्याय पुण्य कर्म भोगने लायक नहीं है तो कर्म रिजर्व में चला जाता है और देवगति में ले जाकर के छप्पर फाड़ कर उसको सुख देता है, वहाँ सुख को कोई छीन नहीं सकता।

➲ रावण ने भक्ति के फल में संसार भोग विलासता मांगी और सम्यकदृष्टि कहता है कि मेरे पास जो धन हो, शक्ति हो, उससे मैं धर्म, परोपकार कर सकूँ। मेरे हाथों में वह शक्ति आ जाए जिससे कभी जिनेन्द्रदेव का मंदिर बन सके, ऐसी कोई अतृप्त भावना पूर्व में करता है तो कर्म उसकी इच्छा जरूर पूरी करता है।

पाखण्ड की चकाचौंध : जैन समाज को धरातल पर लाने की साजिश

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

'धर्म वह दीपक है जो अंधकार को काटे, न कि आँखें चौंधियाए।' - आचार्य तुलसी

धर्म का मूल उद्देश्य आत्मोन्नति है, आत्म संयम है, और समाज को नैतिक मूल्यों की ओर अग्रसर करना है। परंतु जब धर्म प्रदर्शन बन जाए, जब आस्था दिखावा बन जाए, और जब साधु-संतों का स्वागत राजनीति और धनबल से हो तब समझना चाहिए कि कहीं कुछ गंभीर रूप से गलत हो रहा है।

हाल ही में प्रकाशित एक समाचार पत्र के अनुसार, एक जैन मुनि के नगर प्रवेश के उपलक्ष्य में 33 JCB और दो ड्रोन से पुष्पवर्षा, चाँदी की 121 थालियों में पाद प्रक्षालन और 3 करोड़ रुपये से अधिक की व्यवस्था की जा रही है। यह घटना न केवल धर्म के मूल स्वरूप को धूमिल करती है, बल्कि जैन समाज को एक आडंबर प्रिय, दिखावटी और भटके हुए समुदाय के रूप में प्रस्तुत करती है।

धर्म का कार्य है आत्मा को भीतर से प्रकाशित करना, जीवन को संयम, तप और सेवा की ओर मोड़ना। लेकिन जब धर्म प्रदर्शन बन जाए, जब तपस्या का स्थान तमाशे ले लें और जब साधु-संतों का स्वागत राजनीति और पैसे से हो, तो समझना चाहिए कि समाज एक गंभीर संकट से गुजर रहा है।

आज जैन समाज में भव्य प्रवेश, हेलीकॉप्टर पुष्पवर्षा, चांदी की थालियों में पाद प्रक्षालन जैसी प्रवृत्तियाँ धर्म के नाम पर अपनाई जा रही हैं। यह लेख इसी विसंगति की गहराई से विवेचना करता है।

1. जैन धर्म की मूल आत्मा: तप, त्याग और तटस्थता - जैन धर्म का आधार है: 'अहिंसा परमो धर्मः', 'अपरिग्रह' और 'संयम'। भगवान महावीर ने वस्त्र त्यागे थे, महलों को छोड़ दिया था और वर्षों तक मौन तपस्या की थी।

उदाहरण: भगवान महावीर का प्रथम उपदेश था - 'त्याग से ही मुक्ति संभव है।' उन्होंने कभी सम्मान की अपेक्षा नहीं की। उनके अनुयायियों ने बिना संसाधनों के धर्म को जिया।

भगवान महावीर ने अपने जीवन में किसी प्रकार के दिखावे, प्रदर्शन या सम्मान की अपेक्षा नहीं की। उन्होंने वस्त्रों का त्याग किया, महल छोड़े और निर्वस्त्र होकर मौन तपस्या में लीन हो गए।

विचारणीय प्रश्न: क्या वे कभी चाहते कि उनके पाद प्रक्षालन चांदी की थालियों में हों? या उनके अनुयायियों का स्वागत JCB और हेलीकॉप्टर से हो?

2. मुनियों का महिमामंडन या राजनीतिक उत्सव ?: आजकल जब कोई मुनिराज नगर में प्रवेश करते हैं, तो उसका स्वरूप किसी राजकीय आगमन से कम नहीं होता।

33 JCB से सड़क सजावट, हेलीकॉप्टर से फूलों की वर्षा, चांदी की 121 थालियों में पाद प्रक्षालन, करोड़ों रुपये की व्यवस्था ??

कोट: 'जब संत सिंहासन पर बैठ जाएं और राजा चरणों में, तब समाज पतन की ओर होता है।' - कबीर

यह धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि आयोजन और शक्ति प्रदर्शन बन चुका है। इससे युवाओं में यह संदेश जाता है कि धर्म सिर्फ दिखावा है, जिसमें पैसा और प्रचार ही सब कुछ है। धर्म का उद्देश्य अगर दिखावे और आयोजन बन जाएं, तो वह सच्चे धर्म की हत्या है।

खतरनाक संकेत: महंगी सजावट, सुरक्षा, फूलों की बर्बादी, स्थानीय प्रशासन का उपयोग धर्म प्रचार के लिए, **समाज के युवाओं में गलत संदेश:** धर्म मतलब शक्ति प्रदर्शन।

3. पाद प्रक्षालन: श्रद्धा या दिखावा? - चाँदी की 121 थालियों में मुनि का पाद प्रक्षालन और जनता का जयघोष - क्या यह श्रद्धा है या केवल दिखावा?

विश्लेषण:

- एक तरफ तपस्वी साधु, दूसरी तरफ चाँदी की थालियाँ?
- यह विरोधाभास ही धर्म का मखौल बनाता है।
- इससे साधु-संस्था की गरिमा कम होती है।

श्रद्धा ह्रदय से होती है, दिखावे से नहीं। जब तपस्वी मुनिराजों का पाद प्रक्षालन चांदी की थालियों में किया जाता है, तो यह धर्म का मखौल बन जाता है। यह न तो मुनियों के त्याग के अनुरूप है और न ही जैन धर्म की शिक्षाओं के अनुसार। इससे साधु-संस्था की गरिमा पर प्रश्नचिह्न लगते हैं।

4. आर्थिक पक्ष: करोड़ों का खर्च और समाज की जरूरतें - जब ऐसे आयोजनों पर करोड़ों खर्च होते हैं, तब यह सवाल उठना स्वाभाविक है -

- क्या जैन समाज की सारी जरूरतें पूरी हो चुकी हैं?
- क्या कोई बच्चा फीस के कारण पढ़ाई नहीं छोड़ रहा?
- क्या कोई बुजुर्ग दवा के लिए परेशान नहीं?
- क्या ग्रामीण इलाकों में कोई जैन परिवार भूखा नहीं?

जैन समाज के कई हिस्से आज भी शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। फिर यह करोड़ों रुपये कहाँ और क्यों खर्च हो रहे हैं?

उदाहरण:

- कोई छात्र फीस न दे पाने के कारण पढ़ाई छोड़ रहा है।
- किसी वृद्ध की दवा के पैसे नहीं हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में जैन समाज की उपेक्षा।

कोट - ''जहाँ धर्म के नाम पर धन की होली जलाई जाती है, वहाँ भगवान नहीं, अहंकार विराजमान होता है।'' - ओशो

5. दीक्षा और चातुर्मास: साधना या इवेंट मैनेजमेंट? - चातुर्मास और दीक्षा जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक अवसर अब भव्यता और प्रतिस्पर्धा के मंच बन चुके हैं।

- दीक्षा के समय लाखों का खर्च, बैंड-बाजे, मंच और सजावट।
- चातुर्मास में घोड़ों, हाथियों की सवारी।
- सड़कें और गेट लाखों की लागत से तैयार।

प्रश्नः क्या आत्मा की यात्रा भी अब स्पॉन्सर्ड हो गई है?

6. युवाओं का मोहभंग: धर्म से दूरी का कारण - आज के युवा जब यह सब देखते हैं तोः धर्म को तमाशा समझने लगते हैं, साधुओं पर विश्वास कम होता है, सोशल मीडिया पर आलोचना होती है, आलोचना का शिकार बनता समाज।

उदाहरण: एक युवक ने कहा - 'अगर यही धर्म है तो मैं नास्तिक होना बेहतर समझता हूँ।'

7. साधुओं की भूमिका - मौन या मार्गदर्शन? - अगर साधु-संतों ने इस भव्यता पर मौन धारण कर लिया है तो यह मौन सहमति मानी जाएगी। साधु वही जो समाज को दिशा दें, दिखावा नहीं करें।

कोट: 'संत वही, जो खुद को मिटा दे, जो अपने लिए पुल बनाए, वह व्यापारी है।' - तुलसीदास

8. क्या यह पाखंड नहीं है? - सच्चा संत जनता के चरणों में नहीं, आत्मा के भीतर होता है। जो संत स्वयं को पुजवाता है, वह केवल शरीर है, आत्मा नहीं।

कोट: 'संत वही, जो खुद को मिटा दे, जो अपने लिए पुल बनाए, वह व्यापारी है।' - तुलसीदास

9. समाधान: सादगी, सेवा और शिक्षा - इस प्रकार के आयोजन समाज को गलत दिशा में ले जाते हैं। सुधार आवश्यक है। इस चकाचौंध से जैन धर्म की आत्मा को बचाने के लिए -

- आयोजन सादगीपूर्ण हों, बिना बैंड-बाजे के।
- स्वागत के स्थान पर समाजसेवा के कार्य हों, अनाथालय, चिकित्सालय, विद्यालय आदि में सेवा।
- साधु-संत स्वयं तय करें कि वे केवल सादगीपूर्ण प्रवेश स्वीकार करेंगे।
- नई पीढ़ी को सिखाया जाए कि धर्म आत्मानुशासन है, प्रदर्शन नहीं।
- चाँदी की थालियों के स्थान पर गरीबों को भोजन।

8. निष्कर्ष: धर्म का उद्देश्य मुक्ति है, न कि उत्सव। आज जब धर्म दिखावा बन रहा है, तब यह आवश्यक है कि हम अपने भीतर झाँकें। जैन धर्म की गरिमा साधु-संतों के त्याग में है, न कि उनके स्वागत में। धर्म वह मार्ग है जो आत्मा को मुक्त करता है, न कि ऐसा मंच जिस पर करोड़ों का खर्च और प्रतियोगिता हो। जैन धर्म की गरिमा भगवान महावीर के त्याग, वैराग्य और मौन साधना में है, न कि हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा और चांदी की थालियों में। ऐसे आयोजनों पर प्रश्न उठाना पाप नहीं, बल्कि यह धर्म की सच्ची सेवा है।

अंतिम शब्द - 'जिस दिन साधु-संतों का स्वागत फूलों से नहीं, प्रश्नों से होगा, उस दिन समाज सही मार्ग पर होगा।'

अब यह जैन समाज को तय करना है - हमें भगवान महावीर के मार्ग पर चलना है या किसी इवेंट मैनेजर की तरह धर्म का तमाशा बनाना है। यह लेख किसी व्यक्ति विशेष के विरोध में नहीं, बल्कि समाज और धर्म की मूल भावना को जीवित रखने के उद्देश्य से लिखा गया है।

अनाज और सब्जियों से शरीर में जा रहा धीमा जहर

विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.)

देश में अनाज और सब्जियों की खेती में कीटनाशक रसायनों का जोरशोर से उपयोग करने से कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी का खतरा हो गया है। रासायनिक खाद का उपयोग अधिक पैदावार लेने किया जा रहा है। रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के कृषकों द्वारा खेती में उपयोग करने से आम जनता के जीवन को खतरा पैदा हो गया है। समस्त कीटनाशक जैविक जहर हैं। विभिन्न प्रकार के जहर अलग-अलग तरह से प्रभावी होते हैं। सभी जहर जीव कोशिकाओं में सतत चल रही रासायनिक जीवन प्रक्रिया को बाधित कर देते हैं। ऐसे कीटनाशकों के प्रयोग से रक्त कैंसर, ब्रेन केंसर और साफ्ट टिश्यू सरकोमा नामक कैंसर होने की दर अधिक होती है। मानव शरीर में रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति क्षीण होने से भी कैंसर की संभावना बढ़ जाती है। विभिन्न प्रकार के रासायनिक जहर होते हैं। मानव शरीर पर इनका कुप्रभाव पड़ता है। इनसे कैंसर भी हो सकता है। यह साक्ष्य कीटनाशकों के व्यापक प्रयोग पर धीरे धीरे सामने आये हैं। कीटनाशकों के व्यापक प्रयोग से अमेरिका में पक्षी विलुप्त हो गये। पक्षियों का कलरव बंद हो गया। इसी को आधारित कर 'रेचल कारसन' ने सन 1962 में 'साइलेंट स्प्रिंग' पुस्तक लिखी जो क्रांतिकारी सिद्ध हुई। पहली बार कीटनाशकों के घातक प्रभाव उजागर हुए और मीडिया ने भी इसे प्रमुखता से उठाया। जिसके कारण जनसाधारण भी उद्वेलित हुआ और सरकार जागी। विश्व भर में प्रतिक्रिया हुई। कृषि विभाग द्वारा हाल में जारी रिपोर्ट के अनुसार देश के विभिन्न क्षेत्रों में फल, सब्जियों, अण्डों और दूध में कीटनाशकों की उपस्थिति के अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि इन सभी में इनकी न्यूनतम स्वीकृत मात्रा से काफी अधिक मात्रा पाई गई है। हाल ही में देश के विभिन्न हिस्सों से एकत्र किये गये खाद्यान्न के नमूनों का अध्ययन देश के 20 प्रतिष्ठित प्रयोगशालाओं में किया गया। अधिकांश नमूनों में डी. डी. टी., लिण्डेन और मोनोक्रोटोफास जैसे खतरनाक और प्रतिबंधित कीटनाशकों के अंश इनकी न्यूनतम स्वीकृत मात्रा से अधिक मात्रा में पाये गये हैं। इलाहाबाद से लिये गये टमाटर के नमूनों में डी. डी. टी. की मात्रा न्यूनतम से 108 गुनी अधिक पाई गई, यहीं से लिये गये बेंगन भटे के नमूने में प्रतिबंधित कीटनाशक हेप्टाक्लोर की मात्रा न्यूनतम स्वीकृत मात्रा से 10 गुनी अधिक पाई गई है, उल्लेखनीय है हेप्टाक्लोर लीवर और तंत्रिका तंत्र को नष्ट करता है। गोरखपुर से लिये सेव के नमूने में क्लोरडेन नामक कीटनाशक जो कि लीवर, फेफड़ा, किडनी, आँख और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को नुकसान पहुँचाता है। अहमदाबाद से एकत्र दूध के प्रसिद्ध ब्रांड अमूल में क्लोरपायरीफास नामक कीटनाशक के अंश पाये गये है, यह कीटनाशक कैंसरजन्य और संवेदीतंत्र को नुकसान पहुँचाता है। मुंबई से लिये गये पोल्ट्री उत्पाद के नमूने में घातक इण्डोसल्फान के अंश न्यूनतम स्वीकृत मात्रा से 23 गुनी अधिक मात्रा में मिले हैं। अमृतसर से लिए गए फूलगोभी के नमूने में क्लोरणयरीफास की उपस्थिति दर्ज हुई है। असम के चाय बागान से लिए गए चाय के नमूनों में जहरीले फेनप्रोपथ्रिन के अंश पाए गये, जबकि यह चाय के लिए प्रतिबंधित कीटनाशक है। गेहूं और चावल के नमूनों में ऐल्ड्रिन और क्लोरफेनविनफास नामक कीटनाशकों के अंश पाए गए हैं ये दोनों कीटनाशक कैंसर कारक हैं। इस तरह स्पष्ट है कि कीटनाशकों के जहरीले अणु हमारे वातावरण में कण-कण में व्याप्त हो गये हैं। अन्न, जल, फल, दूध और भूमिगत जल सबमें कीटनाशकों के जहरीले अणु मिल चुके हैं और वे धीरे धीरे हमारी मानवता को मौत की ओर ले जा रहे हैं। ये कीटनाशक हमारे अस्तित्व को खतरा बन गये हैं। कण-कण में इन कीटनाशकों की व्याप्ति का कारण है आधुनिक कृषि और जीवनशैली। कृषि और बागवानी में इनके अनियोजित और अंधाधुंध प्रयोग से कैंसर, किडनी रोग, अवसाद और एलर्जी जैसे रोगों को बढ़ाया है। साथ ही ये कीटनाशक जैव विविधता को खतरा साबित हो रहे हैं। आधुनिक खेती की राह में हमने फसलों की कीटों से रक्षा के लिये डी. डी. टी., ऐल्ड्रिन, मेलाथियान एवं लिण्डेन जैसे खतरनाक कीटनाशकों का उपयोग किया, इनसे फसलों के कीट तो मर गये साथ ही पक्षी, तितलियाँ फसल और मिट्टी के रक्षक कई अन्य जीव भी नष्ट हो गए तथा इनके अंश अन्न, जल और हम मनुष्यों में आ गये। राघौगढ़ निवासी कृषि विशेषज्ञ आर. बी. एस. परिहार का कहना है खेती एवं बागवानी में कीटनाशकों के मनमाने उपयोग से मानव शरीर में बढ़ रही गंभीर जानलेवा बीमारियों से बचने जैविक खेती का व्यापक प्रचार प्रसार किया जा रहा है। अनेक परिवारों में जैविक खेती से उत्पादित अनाज एवं सब्जियों का उपयोग किया जा रहा है। इसी प्रकार दूध का उपयोग सावधानी से किया जा रहा है। मगर फिर भी देश की बहुसंख्यक जनता इस ओर से अनभिज्ञ है। इंदौर निवासी सुप्रसिद्ध समाज सेवी स्वयंभू कुमार जैन का कहना है देश के विभिन्न हिस्सों में फल एवं सब्जी उत्पादन में गंदे नालों के दूषित पानी से सिचाई की जाती है। इंदौर महानगर में खान नदी बहती है इस नदी का पानी गंदा एवं दूषित है। फल एवं सब्जी उत्पादन में खान नदी के पानी से अनेक स्थानों पर सिंचाई की जा रही है। कीटनाशक विक्रेताओं और कृषि विभाग की जिम्मेदारी बनती है कि वो किसानों को कीटनाशकों के उचित उपयोग के विषय में शिक्षित करें परन्तु प्रशासनिक लापरवाही के चलते न तो कीटनाशक विक्रेता यह कार्य कर रहे हैं और न ही किसान कल्याण विभाग के कर्ताधर्ता। इससे प्रतीत होता है कि आज कीटनाशक बिल्कुल निर्वाध हमारी प्रकृति को मौत की नींद में ले जाने की तैयारी में लीन है। अगर हम मानवता के प्रति तनिक भी जिम्मेदार हैं तो इनसे बचने के उपायों पर मनन करें।

नोट-लेखक राज्यस्तरीय स्थायी मान्य स्वतंत्र पत्रकार एवं भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय संरक्षक हैं।

अष्टाह्निका: सिद्धों की आराधना का महापर्व

भाग चन्द जैन मित्रपुरा, जयपुर

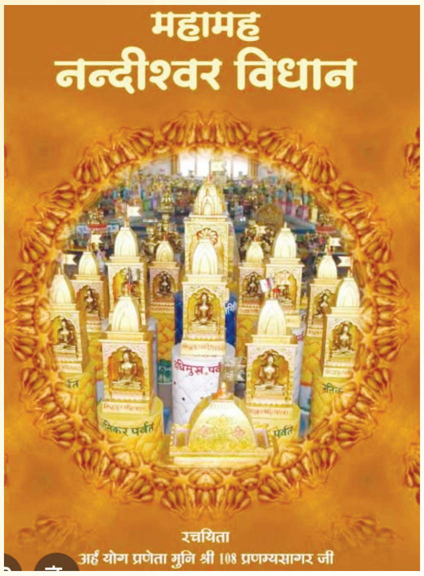

जैन धर्म का अष्टाह्निका पर्व 8 दिन तक मनाए जाने वाला महापर्व है। अष्ट अर्थात् आठ एवं आह्निक का अर्थ दैनिक है। यह पर्व वर्ष में तीन बार कार्तिक, फाल्गुन एवं आषाढ़ माह में शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक आठ दिन तक मनाया जाता है। इस वर्ष आषाढ़ माह की अष्टान्हिका 3 जुलाई से 10 जुलाई 2025 तक मनाई गई।

क्यों मनाया जाता है? – सौधर्म इंद्र अपने इंद्र परिवार के साथ नंदीश्वर द्वीप जो कि आठवां द्वीप है, जिसमें अनादि, अनंतकालीन 52 अकृत्रिम, जो कि शाश्वत है किसी के द्वारा बनाए नहीं गए हैं, जिन चैत्यालय है, जिनमें अकृत्रिम जिन प्रतिमाएं विराजित हैं, में पूजन करके स्वयं को पुण्यशाली समझते हैं एवं हर्षित होते हैं।

भूलोक में इसी पुण्य मार्ग का अनुसरण करने की भावनानुरूप हम स्वयं को इन्द्र का भाव रखते हुए, देवलोक जैसी शक्ति का आभास कर जिन मंदिरों में पूजा, आराधना करते हैं।

किसकी आराधना की जाती है? – इस दौरान सिद्धों की आराधना करते हुए आठ दिनों तक सिद्धचक्र विधान का आयोजन करते हैं। सिद्धचक्र विधान मंडल में प्रथम दिन 8, दूसरे दिन से दिन 16, तृतीय दिन 32, चतुर्थ दिन 64, पंचम दिवस 128, छठे दिन 256, सातवें दिन 512 एवं अष्टम दिन 1024 अष्ट द्रव्य के अर्घ समर्पित किए जाते हैं। पर्व के इन दिनों नंदीश्वर द्वीप की भी पूजा कर सकते हैं।

अष्टान्हिका पर्व की शुरुआत मैनासुंदरी द्वारा अपने पति श्रीपाल के कुष्ठ रोग निवारण के लिए की गई पूजा के साथ हुई थी। प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख के अनुसार पति को निरोग करने के उपक्र म में आठ दिन तक सिद्धचक्र विधान मण्डल की पूजा की थी एवं तीर्थंकरों के अभिषेक जल के छींटे देकर रोग निवारण किया था।

आषाढ़ की अष्टान्हिका के समय जैन साधु, साध्वियों द्वारा चार माह के वर्षाकाल की स्थापना भी की जाती है।

सिद्धचक्र विधान मण्डल की महिमा – आचार्य सकलकीर्ति द्वारा संवत 1487 में रचित श्रीपाल चरित्र के अनुसार चम्पापुर के राजा अरिदमन और रानी कुंदप्रभा के तेजस्वी पुत्र रत्न हुआ। उस बालक का नाम श्रीपाल रखा गया। कालांतर में श्रीपाल की प्रतिभा को देखकर राज्य संचालन का दायित्व सौंप दिया गया। राजकार्यों में दत्तचित, कामदेव के समान सुंदर श्रीपाल को एवं अन्य 700 वीरों को अचानक एक साथ महाभयानक कुष्ठ रोग हो गया, जिससे इन लोगों का शरीर गलने लगा एवं खून बहने लगा। इन सभी की दशा देखकर प्रजाजन अत्यंत क्षुब्ध एवं दु:खी रहने लगे। जब रोग की दुर्गंध के कारण वातावरण बिगड़ने लगा, तब चाचा वीरदमन के कहने पर श्रीपाल 700 वीरों के साथ नगर से बहुत दूर उद्यान में जाकर निवास करने लगे।

उधर उज्जयनी नगरी के राजा पहुपाल एवं रानी पद्मरानी के गर्भ से सुरसुंदरी एवं मैनासुंदरी नाम की दो पुत्रियों ने जन्म लिया। उनमें से सुरसुंदरी ने शैव गुरु से एवं मैना सुंदरी ने आर्यिका से धार्मिक अध्ययन किया। पिता के पूछने पर सुरसुंदरी ने अपनी पसंद से स्वेच्छानुसार हरीवाहन से विवाह के लिए पिता को इच्छा प्रकट कर दी। परंतु मैना सुंदरी ने कहा कि कुलीन एवं शीलवती कन्याएं अपने मुख से अभीष्ट वर की भावना कभी प्रकट नहीं करती हैं। यद्यपि मैनासुंदरी ने विद्वतापूर्ण उत्तर दिया तथापि अपने अहम के कारण राजा पुहुपाल तिलमिला गए और क्रोध में आकर कोढ़ी राजा श्रीपाल से उसका विवाह कर दिया। जिसे मैना सुंदरी ने इसे नियति मानकर पिता के निर्णय को सहजता से अपनाया और श्रीपाल का कुष्ठ रोग दूर करने हेतु प्रयासरत रही।

राजा श्रीपाल के कुष्ठ रोग को दूर करने के लिए मैनासुन्दरी ने गुरु से आशीर्वाद प्राप्त कर विधि के अनुसार अष्टान्हिका पर्व में सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया एवं अभिषेक गंधोदक का सभी रोगियों के ऊपर छिड़काव किया, जिसके प्रभाव से श्रीपाल के साथ 700 वीरों का भी कुष्ठ रोग ठीक हो गया था।

कुछ समय बाद श्रीपाल मैनासुन्दरी के साथ चम्पापुरी वापस आ गए। एक दिन श्रीपाल अपने महल की छत पर बैठे हुए थे, कि आकाश में बिजली चमकी, जिसे देखकर उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया। वे अपने पुत्र धनपाल को राज्य सौंपकर वन की ओर चले गए। उनके साथ 8000 रानियां तथा माता कुंदप्रभा भी वन को प्रस्थान कर गई।

श्रीपाल ने मुनिराज के पास जाकर जिन दीक्षा ग्रहण कर ली। उनके साथ 700 वीरों ने भी दीक्षा ले ली। माता कुंदप्रभा व अन्य रानियों ने भी आर्यिका के व्रत ग्रहण किए। श्रीपाल ने कठोर तपस्या करते हुए अल्प समय में ही घातिया कर्मों का नाश कर केवलज्ञान प्राप्त किया फिर शेष अघातिया कर्मों का नाश कर मोक्षधाम को प्राप्त हुए एवं मैनासुंदरी ने भी अगले भव में उच्च गति प्राप्त की।

सिद्धचक्र मण्डल विधान पूजन सबसे प्राचीन और सभी पूजनों में सबसे बड़ा पूजन है। सिद्धचक्र यन्त्र जैन धर्म में सबसे शुभ और बहुमुखी गूढ़ार्थ आरेख है। सिद्ध का अर्थ कृत्य-कृत्य जो मुक्त आत्मा को इंगित करता है और चक्र का अर्थ है समूह जो कर्म बंधनों से मुक्ति का प्रतीक है। यंत्र का अर्थ है एक गूढ़ार्थ आरेख। मण्डल का अर्थ है एक प्रकार के वृताकार यन्त्र से है। मण्डल में अनेक प्रकार के मंत्र एवं बीजाक्षरों की स्थापना की जाती है। मंत्र से, शास्त्र के अनुसार, इसमें अनेक प्रकार की शक्तियां प्रकट हो जाती है।

सिद्धचक्र महामण्डल विधान पूजा समस्त सिद्ध समूह की आराधना मण्डल की साक्षी में की जाती है, जो हमारे समस्त मनोरथों को पूर्ण करती है। जैन धर्म में, सिद्ध वे आत्माएं हैं जिन्होंने अपने आघातियां कर्मों का क्षय कर लिया है और वे जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर लिया है। सिद्धों को अष्टगुणों से युक्त माना जाता है और वे सिद्धशिला पर विराजमान हो जाते हैं।

धर्म गुरुओं द्वारा अपने प्रवचनों में कहा जाता है कि जीवन में सभी को नंदीश्वर द्वीप पूजा एवं सिद्धचक्र मण्डल विधान पूजा अवश्य करनी चाहिए। इससे सांसारिक सुख एवं साथ ही मोक्षमार्ग प्रशस्त होता है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Padam Chand Jain (Dhakra)

(Vice President-Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha)

Mahendra Kumar Jain (Dhakra)

(Working President- Shri Bharatvarshiya Digamber Jain (Teerth Sanrakshini) Mahasabha T. N. Branch

Pradeep Commercial Interprises

(Iron & Steel Merchants)

56, Sembudoss Street, 2nd Floor, P. B. No 8343, Chennai-600 001

Phone No. 25228522, 25220032 Off. 25206812, 25202601 Resi.

Mobile : P. C. Jain-9444918024 M.k.Jain-9444028522

ASSOCIATE :

Shanti Enterprises

Banglore 080-25266482, Mob. : 09448092260

बढ़ता मांस निर्यात: अहिंसात्मक जीवन मूल्यों का ह्रास

कैलाश रारा, रायपुर

मांस के व्यापार में भारत आज दुनियां का दूसरा बड़ा निर्यातक देश बन गया है। यह किसी अन्य देश के लिए गौरवपूर्ण बात हो सकती है किन्तु भारत जैसे धर्म प्राण देश में यह अहिंसात्मक जीवन मूल्यों को हतोत्साहित करने वाला वाकिया है। भारत आज दुनियां की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था है। ऐसे निरंतर विकासोपरक राष्ट्र के पास तो विदेशी मुद्रा अर्जित करने के हजारों विकल्प मौजूद होते हैं। सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की दुहाई देने वाले भारत को क्या एक यह ही सम्मानजनक व्यवसाय मिला था।

पंजाब केसरी में अपने आलेख में मनमोहन शर्मा लिखते हैं कि सत्ता में आने से पूर्व नरेन्द्र मोदी जी ने मांस निर्यात पर खूब? घड़ियाली आंसू बहाये थे जबकि सन् 2015 में भारत ने 24 लाख टन बीफ का निर्यात किया था जो कि पूर्व में यह सन् 2012 में 18 लाख एवं 2013 में 21 लाख टन रहा था।

कृषि मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार आजादी के समय हमारे देश में देसी गाय की 211 नस्लें मौजूद थीं मगर अब 37 नस्लें शेष बची हैं। भारतीय गायों का दूध ए. 2 दर्जे का होता है जो कि 36 रोगों का निदान करता है जबकि विदेशी नस्लों की गायों का दूध ह्रदय रोग, गठिया, ओसोसिम, डाइबिटिज, उच्च रक्त चाप एवं कैंसर जैसे रोगों की उत्पत्ति का कारण बनता है।

भारतीय पशु कल्याण बोर्ड के सदस्य एन. जी. जयसिम्हा ने आरोप लगाया है कि मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद गाय की रक्षा और विकास में दिया जाने वाला अनुदान निरन्तर घटता चला गया। यूपीए सरकार ने सन् 2011-12 में इस कार्य के लिये 2177 करोड़ की धनराशि निर्धारित की थी जो कि 2014-15 में घटा कर 1200 करोड़ तथा 2015-16 में इसे 784 करोड़ कर दिया गया।

गूगल में सर्च करने पर कुछ रोचक तथ्य सामने आए हैं:-

1. 5 अप्रैल 2022 आज तक न्यूज- पिछले 5 साल में भारत ने 1-25 लाख करोड़ का मांस निर्यात किया।

2. 7 अप्रैल 2022 यूट्यूब डॉट कॉम- बिफ निर्यात में भारत दूसरे नम्बर पर।

3. 5 जून 2022 फेस बुक डॉट कॉम- साल 2024 में भारत ने 1-57 मिलियन मिट्रिक टन बीफ और बछड़े का मीट निर्यात किया।

4 वर्ष में दोगुनी हुई गौ तस्करी – 11 जून को रायपुर से प्रकाशित अखबार नई दुनियां लिखता है कि - प्रदेश में 2022 से 2025 तक गौ तस्करी के कुल 785 मामले सामने आये जिनमें 1174 गिरफ्तारियां हुई। अखबार आगे लिखता है कि एम. पी., महाराष्ट्र से गौवंश तस्करी कर छ. ग. के सरगुजा एवं बलरामपुर कॉरिडोर के जरिये झारखंड, बिहार के रास्ते पश्चिमी बंगाल के बूचड़खानों में भेजा जा रहा है।

छ. ग. के गृह मंत्री विजय शर्मा कहते हैं कि अब आदतन आरोपियों पर सफेमा लगाया जाएगा।

अहिंसा और पर्यावरण का अविनाभावी सम्बन्ध - अहिंसा और पर्यावरण का अविनाभावी सम्बन्ध है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि जिन स्थानों पर अत्यधिक जीव हिंसा होता है वहीं भूकम्प एवं महामारी जैसी घटनाएं अधिक होती हैं।

अब तो बाबा बागेश्वर भी कहते हैं कि हम सभी प्रकार की बलि के खिलाफ हैं।

त्रिपुरा के त्रिपुरेश्वरी मंदिर में नियमित रूप से बकरी, कबूतर एवं भैंसों की बलि दी जाती है। नवरात्रि भी इसका अपवाद नहीं है।

देवताओं के लिये पशुबलि बंद करो - दैनिक भास्कर रायपुर के 2 सितम्बर 2014 को छपी एक खबर के अनुसार हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट ने राज्य के मंदिरों में होने वाली पशुबलि पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया। कोर्ट ने अपने अंतरिम आदेश में कहा कि हजारों पशुओं को बलि के नाम पर प्रतिवर्ष मौत के घाट उतारा जाता है। इसके कारण पशुओं को असहनीय पीड़ा झेलनी पड़ती है। यह एक सामाजिक कुरीति हैं। इसे समाप्त करना बहुत जरूरी है। जज राजीव शर्मा एवं सुरेश्वर पाठक की खंडपीठ ने स्पष्ट किया कि निर्दोष पशुओं को देवता को प्रसन्न करने के लिये भयानक मौत देना सही नहीं है। आधुनिक समय में आस्था, धार्मिक पूजा और चली आ रही कुरीति के नाम पर पशुओं को मारना गलत है। कोर्ट ने आदेश दिया कि अब कोई व्यक्ति पशुओं की बलि नहीं देगा। यह भी कहा कि कोई भी बलि देने के लिए प्रलोभन नहीं देगा और न ही ऐसे कार्य में संलिप्त होगा।

घटते जंगल और जानवरों का कस्बों में पलायन – घटते जंगलों के कारण जंगली जानवरों का ग्रामों एवं कस्बों की ओर पलायन होता देखा गया है, हमारा कर्तव्य कि हम अपने जंगलों एवं पर्यावरण की रक्षा करें।

प्रदेश में जंगल की 10 हजार एकड़ से ज्यादा जमीन पर अवैध कब्जा - दिनांक 15 जून 2025 को दैनिक भास्कर रायपुर में छपी यह खबर हम सबको झकझोर देने वाली है।

मनुष्य प्रकृति से शाकाहारी प्राणी - महात्मा गांधी कहा करते थे कि मनुष्य प्रकृति से ही शाकाहारी प्राणी है। मांसाहार उसके लिये अनुकूल नहीं है।

देश के सभी बड़े पहलवान शाकाहारी – शाकाहार एक श्रेष्ठ एवं उश्रम पौष्टिक आहार है। हमारे देश के जितने बड़े पहलवान हुए हैं उनमें अधिकांशतः शाकाहारी हुए हैं।

अहिंसा धर्म की रक्षा के लिये हमें जीवों की सुरक्षा करनी ही पड़ेगी - 'अहिंसा परमो धर्मः' हमारा सनातन सांस्कृतिक जीवन मूल्य है। सभी धर्मो ने इसकी पुष्टि की है और क्यों न हो धर्म तो अहिंसा में ही है, हिंसा में तो कोई धर्म होता ही नहीं है।

इसीलिये तुलसीदास जी लिखते हैं कि – दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान। तुलसी दया न छोड़िये, जब लगि घट में प्राण।।

इसी बात को संत कबीर दास जी इस प्रकार कहते हैं कि -

दया राखि धर्म सों पाले,
जग से रहे उदासी।
कह कबीर सुनो भाई साधो,
पद मिले अविनाशी।

गुरू नानक देव जी जिन खेतों की रखवाली करते थे, वे वहां के प्राणियों को कभी उड़ाया नहीं करते थे, बल्कि उनकी और अधिक आवभगत करते थे, नतीजतन उनके खेतों में दूसरो के खेतों से अधिक पैदावार होती थी।

परस्परोपग्रहो जीवानाम् - भगवान महावीर कहते थे कि संसार के जितने भी प्राणी हैं, सब एक दूसरे की भलाई के लिए बने हैं।

संसार के जितने भी प्राणी हैं, सब सुख से जीना चाहते हैं, दुख किसी को प्रिय नहीं है। इसलिए किसी भी प्राणी को कष्ट मत पहुंचाओं और दूसरों के साथ भी ठीक ऐसा ही व्यवहार करो जैसा तुम स्वयं दूसरों से अपने प्रति अपेक्षा करते हो।

अयोध्या में आर्यिका श्री ज्ञानमती जी ससंघ का वर्षायोग

अयोध्या में दिगम्बर जैन समाज की सबसे बड़ी सर्वोच्च साध्वी 91 साल की उम्र व 72 साल से दीक्षित आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी ससंघ का वर्षायोग स्थापना व गुरू पूर्णिमा बिना किसी आंडबर न बोली न कलश स्थापना, बहुत सादगी से सम्पन्न हुई।

माताजी के संघ में कुल 16 पीछी हैं जिसमें 12 माताजी, 2 क्षुल्लक जी व दो क्षुल्लिका जी हैं। एक विचारणीय प्रश्न सभी को अयोध्या क्यों जाना चाहिए? सभी जैन भाईयों व परिजनों को अयोध्या दर्शन हेतु आना चाहिए क्योंकि भगवान श्री राम भी हमारे आराध्य हैं पर उनसे करोड़ों वर्षों पहले भगवान श्री आदिनाथजी आदि तीर्थंकरों ने अयोध्या में जन्म लिया। हमारे जैन समाज के बहुत से महानुभावों को पता नहीं है कि अयोध्या सिर्फ राम जन्म भूमि ही नहीं बल्कि आदिनाथ भगवान के साथ अजीतनाथ जी, अभिनंदननाथ जी, सुमति नाथ जी व अनंत नाथ जी की जन्म भूमि है, पांचों के प्राचीन चरण व मंदिर बने हुए हैं। 1952 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज ने सुमति नाथ भगवान के चरणों के पास समाज को मंदिर बनवाने की प्रेरणा देकर पंचकल्याणक किया व 1965 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज ने वर्तमान परिसर में यहाँ 31 फुट के आदिनाथ जी भगवान की प्रतिमा स्थापित कर पंचकलयाणक कराया था।

आर्यिका श्री ज्ञानमति ने यहाँ तीस साल से ध्यान देकर आर्यिका श्री चंदनामति माताजी व रविंद्र कीर्ति जी स्वामी को निर्देश देकर जीर्ण शीर्ण अवस्था में पड़े भगवान के चरणों का जीर्णोद्धार कराया बल्कि सभी जगह बड़े मंदिरों को बनाकर हमारी विरासत को सुरक्षित करने का काम किया जिस पर अभी तक किसी साधु संतों का ध्यान नहीं गया।

आज बड़े मंदिर में माताजी के आशीर्वाद से तीस चौबीसी मंदिर, जिनके नाम से भारत देश हुआ उन भरत जी भगवान के 31 फुट की प्रतिमा स्थापित हो गयी, समोशरण मंदिर, तीन लोक मंदिर, आदिनाथ भगवान के 101 पुत्रों का मंदिर के अलावा कई मंदिरों का निर्माण कराकर असंभव कार्य कर इस भूमि को हमेशा हमेशा के लिए सुरक्षित कर दिया जिसकी विशालता यहाँ आकर महसूस की जा सकती है।

मंदिर परिसर में 125 कमरों की आधुनिक सुसज्जित एसी कमरों की पाँच मंजिला धर्मशाला बन रही है जिसमें अभी तक 75 कमरे बनकर तैयार हैं व यात्री को ठहराया जा रहा है साथ ही दो और धर्मशाला हैं जिसमें करीब 50/60 कमरे में यात्री ठहरते हैं।

जैन समाज से निवेदन है कि सभी एक बार अयोध्या शाश्वत भूमि के मंदिरों का दर्शन व सरस्वती माँ जिनके कंठ में विराजमान है व करीब पाँच सौ ग्रंथों को लिखने वाली दिगंबर जैन संतों में सबसे बड़ी वयोवृद्ध 91 साल की आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी जिनका जन्मोत्सव शरद पूर्णिमा व 7 अक्टूबर को मनाया जायेगा, आकर दर्शन लाभ प्राप्त करें व अयोध्या का पूरे देश में प्रचार करें।

वर्षायोग सथापना में श्री विजय जी डाक्टर जीवन प्रकाश जी, माताजी के पूर्व परिवार भाई कैलाश जी सुभाष जी सभी बहनें व संघपति अनिल जी दिल्ली, अशोक जी चांदवड जयपुर, प्रमोद जी कासलीवाल औरंगाबाद, सपना जितेंद्र जी खंडवा के साथ पूरे देश से अवध लखनऊ से विशिष्ट महानुभावों ने आकर माताजी के दर्शन किये।

दिल्ली में अद्भुत बोली

अनिल जैन बड़कुल

पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, पूज्य आचार्यश्री समय सागर जी महाराज के आशीर्वाद से, अर्हम योग प्रणेता, पूज्य मुनिश्री प्रणम्य सागर जी महाराज ससंघ का मंगल प्रवेश लाल मन्दिर दिल्ली में चातुर्मास हेतु हुआ। पूज्यवर के सानिध्य में मांगलिक बोलियों में धन के स्थान पर संयम/संकल्प को प्रमुखता दी गई। पाद प्रक्षालन की बोली - 1. आज से आजीवन रात्रि में चारों प्रकार के आहार का त्याग का संकल्प 2. आज से आजीवन श्रीजी के अभिषेक का संकल्प। शास्त्र दान की बोली - 1. आजीवन प्रतिदिन 1 घण्टे स्वाध्याय का नियम। बोलियों में केवल वही नए व्यक्तियों ने संकल्प लिया, जिनका पहले से यह संकल्प नहीं था। आजकल हर धार्मिक आयोजन को केवल धन से जोड़ा जाता है। ऐसे में संभवतः देश के इतिहास में यह प्रथम अवसर है जब बढ़े-बढ़े धनाढ्य लोगों की उपस्थिति में धन को नहीं त्याग/संकल्प धारण करने वालों को ही सौभाग्य प्रदान किया गया। धन्य हैं ऐसे मुनिराज, धन्य हैं चातुर्मास आयोजक गण।

जैन समाज ने सांसद जी का आभार व्यक्त किया

राजेश जैन दद्दू

इंदौर, 6 जुलाई 2025। इंदौर प्रवास के दौरान इलाहाबाद लोकसभा से माननीय सांसद उज्जवल रमण सिंह से रेडीसन होटल में जैन समाज एवं विश्व जैन संगठन ने मुलाकात कर उनका स्वागत अभिनन्दन किया और जैन समाज के मुद्दों पर चर्चा की। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन ने बताया कि सांसद द्वारा निरंतर जैन धर्म और समाज के हितार्थ संसद में समाज हित में आवाज उठायी जाती रहती है। हाल ही में आपके द्वारा गिरनार पर्वत पर जैन समाज के अधिकारों को लेकर 16 दिसंबर 2024 को लोकसभा में प्रकरण उठाया गया था और आपने लोकसभा में कहा भी था कि जैन तीर्थ गिरनार पर जैन समाज का ही अधिकार है। आपके द्वारा 27 जून 2025 को मुख्यमंत्री गुजरात सरकार को पत्र लिखकर गिरनार पर्वत पर जैन अनुयायियों के सुरक्षित दर्शन पूजन वंदना व पांचवीं टोंक पर निर्वाण लाडू अर्पण करने की समुचित सुरक्षा व्यवस्था करने हेतु गुजरात सरकार से अनुरोध किया गया था। दद्दू ने कहा कि आपके पिता गंगा पुत्र कुंवर रेवती रमण सिंह जी द्वारा 29 मार्च 2022 को सबसे पहले जैन समाज की आस्था का केन्द्र शिखरजी का प्रकरण राज्य सभा में उठाया गया था। इसलिए आज समाज एवं विश्व जैन संगठन द्वारा समाज की तरफ से मयंक जैन, नकुल पाटोदी, देवेन्द्र सेठी, पारस जैन, राहुल जैन, आकाश जैन, ओम् पाटोदी आदि ने मिलकर सांसद महोदय का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मयंक जैन ने कहा कि जैन समाज आप दोनों पिता पुत्र का सदैव आभारी रहेगा।

जैन मन्दिर में धूमधाम से मना गुरू पूर्णिमा पर्व

पुनीत जैन

लखनऊ। जैन मंदिर जैन बाग डालीगंज में गुरु पूर्णिमा पर्व उपाध्याय श्री 108 आदीश सागर जी मुनिराज के सानिध्य में धूमधाम से मनाया गया। श्री जैन धर्म प्रवर्धनी सभा के अध्यक्ष विनय कुमार जैन गर्ग की अध्यक्षता में दीप प्रज्वलन के साथ सभा का प्रारम्भ हुआ। महिला मण्डल से बीना ने मंगलाचरण किया। सभी भक्तों ने उपाध्याय श्री के चरणों में श्रीफल अर्पित किया एवं अष्ट द्रव्यों के साथ मुनिराज का पूजन किया। मुनिराज का पाद प्रक्षालन करने का लाभ संदीप जैन (जैन बंधु) परिवार ने प्राप्त किया। वहीं सभा अध्यक्ष विनय जैन ने मुनिराज को शास्त्र भेंट किया। उपाध्याय ने अपने प्रवचन में बताया कि जिनेन्द्र देव की भक्ति करने से बड़े से बड़े भय दूर हो जाते है। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष विनय कुमार जैन, सभा के कोषाध्यक्ष सुशील कुमार जैन, उप प्रबंधक पार्श्व कुमार जैन, संयोजक मण्डल से अनिल, संदीप, विकास, पुष्पेंद्र, अंशु, राजू जैन आदि मौजूद रहे।

डॉ. प्रगति जैन को लंदन में मिला 'बेस्ट पेपर अवार्ड'

अनुपमा राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

इंदौर। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न, ख्याति प्राप्त शिक्षाविद, गणित विषय पर अनेक पुस्तकों की लेखिका डॉ. प्रगति जैन इंदौर ने लंदन मेट्रोपॉलिटन यूनिवर्सिटी में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सहभागिता कर इतिहास रच दिया। जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धांत अनेकांतवाद और स्याद्वाद को उन्होंने समझा और वर्तमान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए आई) के साथ जोड़ा। संपूर्ण विश्व से आए 40 देश के विद्वानों के बीच उन्होंने अपना शोध आलेख 'एक्सप्लेनेबल आर्टिफिशल इंटेलिजेंस थ्रू स्याद्वाद लॉजिक' प्रस्तुत किया जिसमें उन्हें 'बेस्ट पेपर अवार्ड' प्रदान किया गया। दिगम्बर जैन जगत की बहुमुखी प्रतिभा - युवा समाजसेवी राजेंद्र जैन महावीर सनावद ने बताया कि डॉ.

प्रगति जैन, जैन दर्शन की पहली महिला विदुषी हैं जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेस्ट पेपर अवार्ड 40 देश के विभिन्न विद्वानों के बीच प्राप्त किया। जैन सिद्धांत की सार्वभौमिकता व प्रासंगिकता को वैश्विक पटल पर स्थापित कर डॉ. प्रगति जैन ने जैन जगत में एक उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। आचार्य वीरसेन एवं उनका गणितीय अवदान विषय पर पीएचडी करने वाली डॉ. प्रगति जैन गणित की प्रोफेसर, शिक्षाविद, लेखिका, मोटिवेशनल स्पीकर, कुशल मंच संचालक, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की पीएचडी गाइड भी हैं। डॉ. प्रगति जैन द्वारा लिखित किताब 'द पावर का पॉज' अमेजॉन की बेस्ट सेलर किताब रही है। ब्राह्मी-सुंदरी अवार्ड, ग्लोबल जैन सशक्त महिला पुरस्कार, युवा रत्न पुरस्कार, उत्कृष्ट युवा पुरस्कार, भास्कर महिला पुरस्कार सहित अनेक महत्वपूर्ण पुरस्कार मिल चुके हैं। आपके 50 से अधिक शोध पत्र राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हो चुके हैं व तीन पेटेंट दर्ज हैं। बहुमुखी प्रतिभा की धनी डॉ. प्रगति जैन को बेस्ट पेपर अवार्ड मिलने पर अनेक स्नेहीजनों ने हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

2040 अर्घों के समर्पण के साथ हुई सिद्धों की महाअर्चना

संजय कुमार जैन, संवाददाता

अजमेर 10 जुलाई, 2025। श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर सोनीनगर अजमेर में जैन धर्म के अष्टान्हिका शाश्वत महापर्व माना जाता है। इस अवसर पर पिछले 8 दिनों से श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन चल रहा है जो आज 2040 अर्घों के समर्पण के साथ डॉ. राजकुमार गोधा के निर्देशन में सानंद सम्पन्न हुआ। डॉ. राजकुमार गोधा ने जानकारी दी कि इस पर्व में देवतागण नन्दीश्वर द्वीप में जाकर आठों प्रहर विशेष पूजा अर्चना श्रावकों द्वारा आठ द्रव्यों में श्रीफल, बादाम, अखरोट, चावल चिटक, केसर, धूप चंदन, दीप आदि सजाकर विशेष भक्ति भाव से संगीतमय ध्वनि के साथ महामंडल विधान पर थाली में सजाकर अर्घ्य समर्पित किये गये। प्रवक्ता संजय कुमार जैन ने बताया कि श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान पूजन का प्रारंभ 3 जुलाई को प्रातः झंडारोहण शान्तिलाल पाटनी के द्वारा किया गया, जिसमें मुख्य कलश श्रीमती स्नेहलता जैन, चतुर्थकोण कलश क्रमशः डॉ. राजकुमार गोधा, अशोक बज, पवन पाटनी घी वाले, श्रीमति शशि सेठी एवं दीप प्रज्जवलन प्रदीप बड़जात्या द्वारा किया गया तथा पूरे विधान में 40 परिवारों द्वारा वृहद शान्तिधारा करने का सौभाग्य प्राप्त किया। गुरू पूर्णिमा के अवसर पर विशेष पूजा गुरुओं की गई, इससे पूर्व प्रतिदिन सुबह जिनेन्द्र देव के अभिषेक, वृहद शान्ति धारा के पश्चात् महामंडल विधान पर अर्घ समर्पित किये गये तथा सायं महाआरती एवं भक्तामर पाठ के साथ णमोकार महामंत्र का जाप भी किया गया।

निर्ग्रन्थ मुनिराज का मंगल वर्षायोग

युग श्रेष्ठ, तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज के चर्या की छवि तथा जिनागम को शिरोधार्य रखके चल रहे निर्ग्रन्थ मुनि श्री सुवंद्यसागर महाराज का इस वर्ष 2025 मंगल वर्षायोग महाराष्ट्र में बोरगांव मंजू जिला अकोला, महाराष्ट्र में होने की संभावना है, बोरगांव मंजू यह गांव अकोला से (18 किमी) मूर्तिजापुर रोड पर है। दर्शनार्थी श्रावकों की समुचित व्यवस्था स्थानिक जैन समाज की ओर से की गई है। निवेदक - श्री दिगंबर जैन समाज बोरगांव मंजू। सम्पर्क - ब्र. कमल श्री जैन 7020624843, आदित अजमेरा 9067448595, विवेक वाडे वाले 9881166005।

श्रीमती मंजू जैन की वैराग्य सभा

रमेश चंद्र जैन एडवोकेट

नई दिल्ली। राजधानी के प्रमुख समाजसेवी स्व. श्री शीलचंद जैन जौहरी चांदनी चौक के ज्येष्ठ पुत्र सुरेंद्र कुमार जैन जौहरी एन-35, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन नई दिल्ली की धर्मपत्नी श्रीमती मंजू जैन का 77 वर्ष की आयु में 6 जून को पर्याय परिवर्तन हो गया। वे बड़ी धर्म परायण, उदारमना, दानशील, परोपकारी महिला थीं। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। चिन्मय मिशन सभागार लोधी कालोनी में 7 जून को पंडित संजीव जैन न्यू उस्मानपुर के निर्देशन में आयोजित वैराग्य सभा में समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों, सामाजिक और व्यापारिक संस्थाओं की ओर से श्रीमती मंजू जैन को भावभीने श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। परिवारजनों के द्वारा रू. 1100/- जैन गजट को सहायतार्थ भेंट किया गया।

फागी कस्बे में पावन चातुर्मास 2025 के मंगल कलश की हर्षोल्लास पूर्वक हुई स्थापना

कैलाशचंद, हनुमान प्रसाद, सीताराम, अशोक कुमार, विनोद कुमार भरत कलवाड़ा परिवार ने बोली के माध्यम से मुख्य कलश स्थापित करने का धर्म लाभ प्राप्त किया

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

फागी, 11 जुलाई। फागी कस्बे के पार्श्वनाथ चैत्यालय में विराजमान आर्यिका सुरम्यमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में गुरु पूर्णिमा के पर्व पर सायंकाल देर पावन चातुर्मास की 2025 घोषणा हुई। कार्यक्रम में चातुर्मास आहारचर्या समिति के सदस्य मितेश जैन लदाना ने बताया कि पावन चातुर्मास 2025 के स्थापना दिवस पर कैलाश चंद्र, हनुमान प्रसाद, सीताराम, अशोक कुमार, विनोद कुमार, भरत लाल कलवाडा परिवार ने बोली के माध्यम से चातुर्मास का मुख्य कलश श्री पार्श्वनाथ मंगल कलश स्थापित करने पुण्य प्राप्त किया। द्वितीय कलश आदि सागर की बोली प्यार चंद, त्रिलोकचंद, शिखर चंद, मनीष, रितेश पीपलू वाला परिवार ने बोली के माध्यम से ली, तृतीय कलश सोहनलाल, मोहनलाल, सुकुमार झंडा परिवार ने ली, चतुर्थ कलश आचार्य विमल सागर कलश की बोली नेमीचंद, रमेश चंद्र, पवन कुमार, राजकुमार कागला के छोड़ी गई, पंचम कलश आचार्य सन्मति सागर कलश की बोली सोहनलाल, महावीर प्रसाद, सुकुमार झंडा परिवार ने लेकर धर्म लाभ प्राप्त किया, आचार्य सुन्दर सागर मंगल कलश की बोली कैलाशचंद, हनुमान प्रसाद, सीताराम विनोद कुमार कलवाड़ा ने लेकर धर्म लाभ प्राप्त किया, छठा कलश सुरम्य मति माताजी कलश, रामअवतार, अनिल कुमार कठमाणा वाले परिवारजनों ने लिया, मालपुरा के सूराशाही परिवार ने आर्यिका श्री का पाद प्रक्षालन किया एवं वस्त्र भेंटकर पुण्यार्जन प्राप्त किया, कार्यक्रम में इनके अलावा एक लक्की ड्रा कलश भी रखा गया जिसमें प्रति कूपन रू. 1100 की सहयोग राशि में समाज के सभी लोगों को इस पुण्य कलश में अवसर मिल पाएगा। आर्यिका संघ के पावन सानिध्य में जैन धर्मावलंबियों बन्धुओं ने 11 जुलाई को वीर शासन जयन्ति पर्व मनाया, कार्यक्रम में आर्यिका सुरम्यमति माताजी ने भगवान महावीर के उपदेशों पर विशेष प्रवचन देते हुए बताया कि जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर को वैशाख शुक्ला दशमी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था लेकिन उस समयज्ञान ग्रहण करने वाला कोई उचित श्रोता या शिष्य पात्र नहीं होने के कारण जैन धर्म के अन्य 23 तीर्थंकरों की भांति उस दिन भगवान महावीर की वाणी नहीं खिरी अर्थात् उस दिन भगवान महावीर ने कोई उपदेश नहीं दिया, 65 दिवस पश्चात श्रावण कृष्णा एकम् को राजगिरी में भगवान महावीर का समोवशरण लगा तो उसमें उपदेश को ग्रहण करने वाले उचित पात्र (श्रोता/शिष्य) गौतम गणधर उपस्थित थे। गौतम गणधर को भगवान महावीर ने अपने ज्ञान से पहचान लिया एवं उसी समय भगवान की वाणी खिर गई अर्थात उन्होंने उपदेश देना प्रारंभ कर दिया, इसीलिए यह दिन भगवान महावीर के उपदेशों के महत्व को दर्शाता है। इसी दिन से वीर शासन जयन्ती मनाना शुरु हो गया, जैन धर्मावलंबियों द्वारा हर वर्ष श्रावण कृष्णा प्रतिपदा (एकम्) को यह पर्व पूरे देश में भक्ति भाव से मनाया जाता है।गोधा ने बताया कि भगवान महावीर के अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्य, अपरिग्रह, स्यादवाद, अनेकान्तवाद इत्यादि सिद्धांत आज भी पूरे विश्व के लिए अनुकरणीय हैं। इस दिन संगोष्ठियां, विशेष प्रवचन इत्यादि के आयोजन किये जाते हैं कार्यक्रम में मंदिर समिति के मंत्री कमलेश चौधरी ने बताया कि उक्त कार्यक्रम पंडित सुरेश (के) शास्त्री के दिशा निर्देश सकल दिगम्बर जैन समाज के सहयोग से हर्षोल्लास पूर्वक आयोजित किया गया।

मुनिश्री आदित्य सागर जी महाराज के सान्निध्य में कीर्तिनगर, टोंक रोड में चातुर्मास कलश स्थापना

डालडा फैक्ट्री दुर्गापुरा में हर्षोल्लास से साथ सम्पन्न

जयपुर, 10 जुलाई। कलश स्थापना बहुत ही अच्छी बोलियों के साथ सम्पन्न हुयी, पूरे भारत से भक्त लोग पधारे थे। मुनि श्री का प्राणीमात्र के प्रति जा वात्सल्य है वह देखते ही बनता था। मुनिश्री ने अपने सम्बोधन में कहा कि गुरू एक को बनाओ पर श्रद्धा-भक्ति सभी सन्तों के साथ रखों। श्रद्धा, भक्ति, विनय, समर्पण ये सभी मुनिराजों के प्रति होना चाहिये। गुरू पूर्णिमा हमें यही सिखाती है। भारी जन सैलाब को देखते हुए आचार्य 108 श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के शिष्य का कृतित्व व व्यक्तित्व दृष्टिगोचर हो रहा था। मुनिश्री के प्रवचनों की शैली ऐसी है जो प्रत्येक व्यक्ति को आसानी से समझ में आ जाती है। राजस्थान सरकार की तरफ से भारतीय जनता पाटी के जाने-माने-पहचानें श्री अशोक परनामी पधारे थे तथा पाद-प्रक्षालन का शौभाग्य परम मुनिभक्त, दानवीर श्रेष्ठी, समाज हितैषी, शायद ही पूरे जयपुर के जैन समाज में ऐसा कोई व्यक्ति हो जो उनके नाम से परिचित न हो, ऐसे कुलश-मधु ठोल्या को प्राप्त हुआ। यथा नाम तथा गुण- केवल नाम ही कुशल नही उनका व्यवहार भी प्रत्येक व्यक्ति के साथ कुशल है व मधु जी को तो गंगा मैया के नाम से जाना जाता है। जयपुर के सभी प्रतिष्ठित लोग व कीर्तिनगर मन्दिर की कमेटी सभी इस आयोजन में प्रमुदित मुद्रा में थे। जाने-माने-पहचाने जैन गजट के प्रति 24 घंटे समर्पित रहने वाले राजाबाबू गोधा भी मंच पर थे।

- शेखर चन्द पाटनी,राष्ट्रीय संवाददता

श्री नीरज गंगवाल चेयरमैन हैल्थ प्रोजेक्ट महावीर नगर जयपुर निवासी को किया सम्मानित

संवाददाता

जयपुर शहर के जाने-माने समाजसेवी श्री नीरज गंगवाल को हेल्थ डिपार्मेंट में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए रोटरी क्लब के द्वारा सम्मानित किया गया, कार्यक्रम में रोटरी क्लब जयपुर सिटीजन के अध्यक्ष श्री दिनेश बज ने बताया कि रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3056 के स्वास्थ्य सेवा में सबसे प्रतिष्ठित विद्या विनोद काला रोटरी उत्कृष्टता पुरस्कार (भगवान महावीर कैंसर अस्पताल, जयपुर के संस्थापक स्वर्गीय श्री विद्या विनोद काला की स्मृति में) से क्लब के वरिष्ठ सलाहकार रोटरीयन श्री नीरज गंगवाल को सम्मानित किया गया, कार्यक्रम में EP में रोटरी डिस्ट्रिक्ट अवार्ड सेरेमनी में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर राखी गुप्ता जी, PDG अजय काला जी और अगले साल की गवर्नर प्रज्ञा मेहता जी ने रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3056 के 85 क्लब सदस्यों की मौजूदगी में श्री नीरज गंगवाल को सम्मानित किया। इसी क्रम में सामुदायिक सेवा में रोटरी इंटरनेशनल द्वारा एवेन्यूज ऑफ सर्विस के सर्टिफिकेट से भी सम्मानित किया गया। ज्ञात रहे कि ये चयन डिस्ट्रिक्ट के सभी 85 क्लब के नामांकन में से चयन कमिटी द्वारा चयनित किया जाता है। श्री नीरज गंगवाल अभी चेयरमैन, क्लब हेल्थ प्रोजेक्ट का भी काम बखूबी कर रहे हैं, इस खुशी में जैन गजट के राजाबाबू गोधा सहित सारे समाज ने शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

उपाध्याय वृषभानन्द जी से गुरु पूर्णिमा पर धर्म जागृति संस्थान को मिला आशीर्वाद

आचार्य वसुनंदी के आह्वान के बैनर का हुआ विमोचन, युवाओ को संस्कारवान बनायें - नाम के साथ जैन लिखायें

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर 10.07.25। अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान प्रांत राजस्थान के प्रेरणा श्रोत अभिक्षण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनंदी महामुनिराज के वरिष्ठ शिष्य जयपुर के झोटवाड़ा में विराजित वाचना प्रमुख उपाध्याय श्री 108 वृषभा नंद जी महाराज ससंघ एवं आर्यिका श्री 105 प्रशान्त नंदनी माताजी ससंघ ने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर संस्थान की ओर से श्रीफल समर्पित कर प्रांतीय अध्यक्ष पदम जैन बिलाला, कार्याध्यक्ष अनिल जैन आई पी एस, कोषाध्यक्ष पंकज जैन लुहाड़िया, महेश जैन काला, मंत्री राजीव जैन पाटनी, सोभाग जैन अजमेरा, प्रकाश जैन गंगवाल, सिद्ध जैन सेठी, विमल जैन बाकलीवाल, परमेश जैन सहित सभी सदस्यों ने मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम में समाज की ज्वलंत समस्याओं पर दिए गए आचार्य श्री के संदेश और आह्वान को उपाध्याय श्री वृषभा नंदी जी ने समाज के समक्ष रखते हुए कहा कि सभी अपने नाम के साथ जैन अवश्य लिखे तथा आगे से बच्चों के जन्म प्रमाण पत्र में जैन ही लिखवाए आज लुप्तता की ओर बढ़ते जैन धर्म के लिए संस्थान द्वारा विमोचन कराए जा रहे बैनर की और ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि युवाओं को संस्कारवान बनाने व समय पर विवाह करने के साथ ही आज जनसंख्या बढ़ाने हेतु चार चार बच्चों को जन्म देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि धर्म के कालम में जैन लिखा जाए तथा इस पोस्टर का प्रचार प्रसार पूरे राजस्थान ही नहीं देश भर में किया जाए। संस्थान के प्रांतीय अध्यक्ष पदम जैन बिलाला, कोषाध्यक्ष पंकज जैन लुहाड़िया आदि ने गुरुवर को वात्सल्य की मूर्ति बताते हुए कहा कि गुरु हमारे भाग्य विधाता और जिनवर की राह के पथ प्रदर्शक है। इस अवसर पर झोटवाड़ा समाज के अध्यक्ष अनिल जैन काला, मंत्री नवीन जैन पांड्या संस्थान के सुरेन्द्र जैन काला, पवन जैन पांड्या, धीरज पाटनी, महीप जैन, नरेन जैन आदि सहित झोटवाड़ा समाज की गरिमामय उपस्थिति रही।

धर्म जागृति संस्थान ने किया मुनि आदित्य सागर जी ससंघ का वंदन-अभिनंदन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 04.07.25। अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान के राजस्थान प्रांत के शिवा कालोनी स्थित पंजीकृत कार्यालय पर आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज के गोल्ड मेडलिस्ट शिष्य श्रुत संवेगी मुनि श्री 108 आदित्य सागर जी ससंघ का वंदन-अभिनंदन व पाद प्रक्षालन कर स्वागत किया। जयकारों के मध्य महिलाओं ने सिर पर मंगल कलश लिए स्वागत किया गया । इसके बाद उपस्थित जन समुदाय ने मुनि श्री का अर्घ्य बोलते हुए श्रीफल अर्पित किए। मुनि संघ का धर्म जागृति संस्थान के प्रांतीय अध्यक्ष पदम जैन बिलाला, कोषाध्यक्ष पंकज लुहाड़िया, सिद्ध सेठी, नीरेन जैन, महीप जैन, ज्ञान चंद बस्सी सहित सदस्यों द्वारा पाद प्रक्षालन के बाद महावीर पाटनी, सौभाग अजमेरा, राजेश गोधा, बिमला बिलाला, धन कुमार जैन, कैलाश बिंदायक्या, पारस बिलाला, पवन जैन आदि परिवार ने पाद प्रक्षालन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 01. गुरूजी, जय जिनेन्द्र! व्यापार में तरक्की के लिये श्री भक्तामर स्त्रोत का कौन सा काव्य पढ़ना चाहिये? - मुन्नालाल राठौड़, ग्वालियर

उत्तर - मुन्नालाल जी, श्री भक्तामर स्त्रोत का 28वां काव्य व्यापार के लिये होता है, व्यापार के स्थान पर रोजाना 28 बार पढ़ें।

प्रश्न 02. गुरूजी चरण स्पर्श, णमोकार महामंत्र की रचना किसके द्वारा की गयी है? - कृति, उज्जैन

उत्तर - कृति जी, णमोकार महामंत्र की रचना किसी ने नहीं की है, यह महामंत्र अनादि काल से है।

प्रश्न 7. गुरूजी, आप हमेशा जैन ज्योतिष की बात करते हो, जैन ज्योतिष किस प्रकार अलग है, शंका समाधान करें - सेवकराम जैन, मुम्बई

उत्तर - सेवक राम जी, सनातन ज्योतिष में ग्रहों की पूजा होती है जबकि जैन ज्योतिष में ग्रहों के अरिष्ट निवारक तीर्थंकरों की पूजा की जाती है।

प्रश्न 8. मेरे बेटे की शादी कब होगी? उसकी उम्र 32 वर्ष हो चुकी है - शोभना काला, नागपुर

उत्तर - शोभना जी, आपके बेटे की कुंडली में ग्रहण दोष शादी में बड़ी बाधा है। ग्रहण दोष की शान्ति विधि-विधान के साथ करायें तथा पुखराज रत्न वीरवार को धारण करायें, जल्द परिणाम आयेगा।

गुरु जी से संपर्क सूत्र- 9990402062, 8826755078

शेष पृष्ठ 1 का....

चातुर्मास सर्वोषिध प्रहलाद चंद, विमल कुमार, कमल कुमार, अनिल कुमार, चेतन कुमार, सुनील, दिव्यांश आंडरा परिवार को मिला। वस्त्र भेंट राजेंद्र कुमार, शैलेश कुमार गोयल परिवार को प्राप्त हुआ। पाद प्रक्षालन का सौभाग्य बाबूलाल, नरेंद्र कुमार, राजेंद्र कुमार, मुकेश कुमार, ओम प्रकाश, कुशाल ककोड़ वाले परिवार को मिला। शास्त्र भेंट का सौभाग्य महावीर प्रसाद, धर्मचंद, सुमित कुमार, रवि कुमार दाखिया परिवार को प्राप्त हुआ।

इस मौके पर चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष भागचंद फूलेता, धर्मचंद दाखिया, मंत्री राजेश सराफ धर्मेंद्र पासरोटियां, कमल सर्राफ राजेश बोरदा, रमेश सायवाड, पप्पू नमक, टोनी आंडरा, चेतन आंडरा, डॉ. चेतन, हिमांशु पासरोटियां, हेमराज नमक निवाई, सुरेन्द्र छामुनिया, ज्ञानचंद छामुनिया, किन्नी शिवाड़िया, अर्पित पासरोटियां, मनीष अतार, राहुल पासरोटियां, पुनीत जागीरदार, दिनेश छामुनिया, बेनी प्रसाद कल्ली, अमित छामुनिया आदि मौजूद थे। इस ऐतिहासिक अवसर पर हजारों श्रद्धालु जयपुर, किशनगढ़, कोटा, निवाई, लावा, डिग्गी, टोडा, देवली, पिपलु, उनियारा, इचलकरंजी, पारसोला, धरियावद, सनावद, जोबनेर, इंदौर, सूरत, नैनवा, सांगानेर, अजमेर, कर्नाटक, कोलकाता, अहमदाबाद, सूरत, गोहाटी, सलूंबर सहित अनेक स्थानों से उपस्थित हुए।

समाज का नाम रोशन किया

गुवाहाटी की बेटी कृतिका जैन ने बी.कॉम के छटे सेमेस्टर में गुवाहाटी कार्मस कॉलेज में टाप टेन में नवां स्थान प्राप्त कर अपने माता-पिता एवं जैन समाज का नाम रोशन किया। कृतिका ने परीक्षा में 9.09 सीजीपीए प्राप्त किया है। कृतिका दिसपुर निवासी अवकाश प्राप्त जिला न्यायाधीश श्री टीकमचंद जी एवं श्रीमती हीरामणि जैन की सुपौत्री एवं एडवोकेट श्री संजीव कुमार जैन एवं विनीता जैन की सुपुत्री है।

- शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर
मो. 09425412374
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्पलेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

....

....

....

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।